

# आसार ए क़यामत

मुसन्निफ़

ताजुशरीआ हज़रत अल्लामा  
अख़्तर रज़ा खां कादरी मददाजिल्लहू

तर्जुमा

मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी

[www.jannatikaun.com](http://www.jannatikaun.com)

# आसार—ए—क़यामत

मुसन्निफ़

ताजुशरीआ इज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ कादरी  
अजहरी बरेलवी मददजिल्लहू



**JANNATI KAUN?**

—: तरतीब :-

मौलाना मुहम्मद अब्दुरहीम नशतर फारुकी

—: हिन्दी तर्जमा :-

मौलाना मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी



नम्बर शुमार	सफा नम्बर
1. तकदीम	5
आसर—ए—क्यामत	
2. जब लोग नमाज़ को जाए करने लगें	15
3. जब अमानत राइगाँ कर दी जायें	19
4. जब सूद खोरी की जाने लगे	25
5. जब रिश्त का लेन देन होने लगे	26
6. जब कुर्आन को गाना ठहरा लिया जाये	28
7. जब औलाद दिल की घुठन हो जाये	35
8. जब उलमा अहले सरवत के लिये सीनो पर हाथ बाँधे झुकें	38
9. जब मस्जिदें आरास्ता की जायें	47
10. जब महीने घट जायें	50
11. जब औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें	55
12. जब औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें	57
13. जब गैरुल्लाह की कसम खाई जाये	64
14. जब आदमी बगैर तलब के गवाही में सबकत करे	77
15. जब ओहदे मीरास हो जायें	78
16. जब औरतें औरतों पर और मर्द मर्दों पर इक्तिफा करें	79



### अर्जे मुतर्जिम

उंगे नजर किताब "आसारे कयामत" जैसा कि नाम से जाहिर है कयामत की निशानियों के मौजू पर मुन्फरिद किताब है जिसे पीर व मुर्शिद ताजुशरीआ अल्लना अख्तर रजा खॉ साहब किब्ला जानशीने मुफ्तिर अअजम ने तरनीफ़ फरमाया है।

काफी अर्जे से ख्वाहिश थी कि अल्लामा मौसूफ़ की किताब जो उन्हू जान ने बाले कारेईन में बहुत नशहूर व मकबूल हो चुकी है हिन्दी में शाए करा दिया जाये ताकि हिन्दी दौ हज़रात इस किताब से फाइदा हासिल कर सकें।

मेरी ख्वाहिश को तकवियत उस वक्त मिली कि जब मेरे बहुत सारे अहबाब ने मुझ से कहा कि इजरत की किताब हिन्दी ज़बान में शाए करा दी जाये।

तर्जमा करने में कोशिश यह की गई है कि किताब के अलफाज़ बि ऐनिही हिन्दी में लिख दिये जायें ताकि हिन्दी दौ हज़रात भी पढ़ने में लज्ज़त व तबरूक हासिल कर सकें बअज़ जगह मुश्किल अलफाज़ आसान हिन्दी के ब्रेकिट में लिख दिए गये हैं ताकि हिन्दी पढ़ने वाले आसानी से समझ सकें।

आखिर में तमाम ही कारेईन से गुज़ारिश है कि इस किताब को हिन्दी में पेश करने में कहीं कमीया गलती पायें तो मुतर्जिम की कम इल्मी समझते हुए अप्रव व दर गुज़र से काम लें और साथ ही साथ खादिम को मुत्तला करें ताकि अगले एडिशन में उस को दुरुस्त कर लिया जाये।

अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है कि "आसारे कयामत" उर्दू की तरह हिन्दी में भी मकबूल आम फरमाये और लोगों को इस से फाइदा हासिल कर ने की तौफीक़ रफीक अला फरमाये और मेरे लिए निजात का ज़रीआ बनाये।

आमीन बतुकैल सख्खिदिलमुरसलीन

गुलामे ताजुशरीआ

मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी

दिसम्बर 2009 मोबाइल न. 09219132423



## तकदीम

कयामत बर हक और इस्लाम का एक बुनियादी अकीदा है बे शक वह अपने मुअय्यना वक़्त पर आयेगी और जरूर आयेगी।

चुनाँचे इरशाद बारी तआला है :-

يَأْتِيَنَّ السَّاعَةَ أَتِيَةً .  
यअनी "बे शक कयामत आने वाली है"

जो शख्स कयामत का इन्कार करे या उस में ज़री बराबर शक करे वह काफिर और खारिज अज़ इस्लाम है (यअनी मुसलमान नहीं रहा)

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को उन के अच्छे बुरे अअमाल की सज़ा व जज़ा देने के लिये एक खास दिन मुकर्रर कर रखा है जिस दिन वह नेको कारों (नेक लोगों) को जन्नत की नेअमतेँ और बदकारों को जहन्नम का अज़ाब देगा उर्फ़ शरअ में उसी दिन का नाम "कयामत" है

कयामत की तीन किस्में हैं :

1-कयामते सुगरा (छोटी कयामत)

2-कयामते वुस्ता (दर्मियानी कयामत)

3-कयामते कुबरा (बड़ी कयामत)

कयामते सुगरा मौत को कहते हैं "مَن مَاتَ فَقَدْ قَامَتْ قِيَامَتُهُ"

यअनी " जो मर गया उस की कयामत होगई"।

कयामते वुस्ता यह है कि किसी एक कर्न (ज़माने) के सारे लोग मर जायें फिर दूसरे कर्न के नये लोग पैदा हो जायें।

कयामते कुबरा उस दिन को कहते हैं जिस दिन आसमान व ज़मीन और जो कुछ उस में है सब फ़ना हो जायेंगे। (अलमलफूज हि 3 स 49)

कयामत कब कितने दिनों के बअद और किस सन में आयेगी? उस का इल्म अल्लाह तआला ने सिवाये हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तमाम बन्दों से पोशीदा रखा और खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह हुक्म हुआ कि कयामत बरपा होने का सन वगैरा अपनी उम्मत से छुपाये रखें।

चुनाँचे "हाशिया सावी अला तफ़सीरिलजलालै" में है :



أنه اطلع على الجنة وما فيها والنار وما فيها وغيره  
ذلك مما تواترت به الأخبار ولكن أمر بكتمان البعض.

“यअनी अल्लाह जल्ल शानुहू ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जन्नत व दोज़ख और उन के दाखिली उमूर वगैरा सारे मुआमलात पर इत्तिलाअ बख्शी लेकिन बअज़ असरार (राज)को पोशीदा रखने का हुक्म फरमाया, इस सिलसिले में अख्बारे नबवी तवातुर की हद तक मरवी हैं” (जि. सानी स. 104)

लिहाजा हज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने किसी भी उम्मती को यह नहीं बताया कि क़यामत कब कितने दिनों के बअ़द और किस सन में आयेगी ? अलबत्ता क़यामत के सन के सिवा क़यामत का महीना क़यामत की तारीख़ और क़यामत का दिन यह सब कुछ हज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को बता दिया चुनौचे आज दुनिया का बच्चा बच्चा यह जानता है कि क़यामत मुहर्रम के महीने में दसवीं तारीख़ को जुमआ के दिन जोहर व अर्र के दरमियान आयेगी।

ईसा अलैहिरसलाम के विसाल के बअ़द जब क़यामत की वह खुशबू दार हवा गुज़र चुकेगी जिस से तमाम मोमिनीन की रुहें बाआसानी परवाज़ कर जायेंगी सिर्फ़ काफ़िर ही काफ़िर बचेंगे फिर उन काफ़िरों पर चालीस साल का एक ऐसा ज़माना गुज़रेगा जिस में किसी को औलाद न होगी, किसी की उम्र चालीस साल से कम न होगी किसी को भी वुकूअे क़यामत की परवाह न होगी। कोई खाना खा रहा होगा, कोई पका रहा होगा, कोई दीवार लेप रहा होगा, कोई हल चला रहा होगा, गर्ज कि सारे लोग अपने मअ़मूल के कामों में मशगूल व मुन्हमिक होंगे कि दफ़अतन हज़रत इसराफील अलैहिरसलाम को सूर फूँकने का हुक्म होगा।

शरुअ शुरुअ में उस की आवाज़ बहुत बारीक और सुरीली



होगी और रफता रफता बहुत बलन्द और भयानक होती जायेंगी लोग कान लगा कर उस की आवाज़ सुनेंगे। बे होश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जायेंगे आसमान टुकड़े, टुकड़े हो कर बिखर जायेगा ज़मीन में इतना ज़बरदस्त ज़लज़ला और खौफनाक भूचाल आयेगा कि ज़मीन काँपने लगेगी पहाड़ रेज़ा, रेज़ा हो कर गर्द व गुबार की तरह उड़ने लगेगा। चाँद व सूरज और सितारे बे नूर हो कर झड़जायेंगे यहाँ तक कि सूर और हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम भी फना हो जायेंगे।

उस वक़्त दुनिया में उस वाहिदे हकीकी के सिवा कोई न होगा वह फ़रमायेगा:

**لَمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ.** यअनी आज किस की बादशाही है ?

कहाँ हैं जोर व सितम (जुल्म) करने वाले ? मगर वहाँ कोई होगा ही नहीं जो कुछ जवाब दे फिर अल्लाह वाहिदुलक़हहार वलजब्बार खुद ही इरशाद फ़रमायेगा:

**لِلّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ.** यअनी आज सिर्फ़ अल्लाह वाहिद क़हहार की सलतनत है (पारा 24 / सूरए मोमिन आयत 15)

फिर जब अल्लाह चाहेगा हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमायेगा और सूर को पैदा कर के दो बारा फूँकने का हुक्म देगा सूर फूँकते ही तमाम अब्वलीन व आख़िरीन जिन्न व मलाइका, इनसान व हैवान गर्ज कि तमाम जानदार मख़लूकात ज़िन्दा हो जायेंगे।

उस दिन सब से पहले मुसतफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस क़र् व फ़र (शान) के साथ अपनी क़ब्रे अनवर से बर आमद होंगे कि आप के दायें हाथ में हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रदियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ होगा और बायें हाथ में हज़रत फ़ारूक़े अज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ होगा फिर उस के बअद हुज़ूर मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के मकाबिर में जितने



भी मुसलमान होंगे सब को ले कर मैदाने महशर में तशरीफ़ ले जायेंगे जो सर ज़मीने मुल्के शाम पर मुन्अकिद (काइम) होगा।

क़यामत के आने से पहले बहुत से अलामत व आसारे क़यामत का जुहूर होगा जिन का तफ़सीली इल्म रब्बुलइज़्ज़त ने अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाया और आप ने वह अलामतें अपनी उम्मत पर आश्कार(ज़ाहिर) फ़रमादीं।

चुनौंचे हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हु फ़रमाते है :

”**قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا تَرَكَ شَيْئًا يَكُونُ فِي مَقَامِهِ ذَلِكَ إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلَّا حَدَّثَ بِهِ حَفْظُهُ مِنْ حَفْظِهِ وَنَسِيَهُ مِنْ نَسِيهِ قَدْ عَلِمَهُ أَصْحَابِي هَؤُلَاءِ وَإِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْهُ الشَّيْءُ قَدْ نَسِيْتَهُ فَأَرَاهُ فَاذْكُرْهُ كَمَا يَذْكُرُ الرَّجُلُ وَجْهَ الرَّجُلِ إِذَا غَابَ عَنْهُ ثُمَّ إِذَا رَأَاهُ عَرَفَهُ.**“

यअ़नी “एक मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने खड़े हो कर क़यामत तक पेश आने वाली हर चीज़ बतादी जिसे मेरे यह साथी जानते हैं फिर जिस ने उन्हें याद रखा सो याद रखा और जो भूल गया सो भूल गया जब कोई बात वाक़ेअ़ होती तो मेरे उन साथियों में से कोई बता देता जिस को मैं भूल गया होता तो मुझे ऐसे याद आजाती जैसे किसी गाइब आदमी का चेहरा बयान किया जाता और मैं देख कर उसे पहचान लेता (मिशकात शरीफ़ स 461)

बिला शुबह यह पेशीन गोईयाँ(भविष्य वाणी) हज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के बे इन्तिहा समन्दरे इल्म का एक कतरा और **”وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ“** का एक छोटा सा नमूना हैं।

इन पेशीन गोइयों और अलामतों की दो किस्में हैं एक “अलामाते सुग़रा” यअ़नी छोटी निशानियाँ और दूसरी “अलामाते कुबरा” यअ़नी बड़ी निशानियाँ।



अलामाते सुगरा वह निशानियाँ हैं जिन का जुहूर कयामत आने से बहुत पहले ही होने लगेंगा और अलामाते कुबरा वह निशानियाँ हैं जो कयामत के बिल्कुल करीब जाहिर होंगी।

जेरे नज़र "अलामाते सुगरा" से मुतअल्लिक "कन्जुल उम्माल" की एक ऐसी हदीस पर मुश्तमिल है जो तकरीबन कयामत की 72 निशानियों को मुहीत है।

मुरशिदी व उस्ताज़ी हुज़ूर ताजुशरीआ हज़रत अल्लामा अलहाज अशशाह मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा खाँ कादरी अजहरी बरेलवी मदज़िल्लाहुन्नूरानी ने सब से पहले उस हदीसे पाक का सलीस तर्जमा फ़रमाया है उस के बाद सिर्फ़ उन आसार व अलामात (निशानियों) पर कलाम फ़रमाया है जो आम फ़हम न थे और जो अलामात आम फ़हम और वाज़ेह थी उन का तर्जमा ही उस अन्दाज़ में फ़रमाया है कि मज़ीद किसी तशरीह व तौज़ीह की ज़रूरत ही बाकी नहीं रही है।

### JANNATI KAUN?

हुज़ूर ताजुशरीआ ने जिन अलामात व आसार की तशरीह व तौज़ीह की है उन्हें खास तौर पर उन की ताईद अहादीसे करीमा ही से वाज़ेह फ़रमाया है इस तरह यह किताब "आसारे कयामत" पर मुश्तमिल हदीसों का एक मबसूत और नादिर व दिल आवेज़ गुलदस्ता बन गई है नीज़ उस किताब में आप ने "आसारे कयामत" से मुतअल्लिक बेश्तर उन गोशों को आश्कार(जाहिर)फ़रमाया है जो अब तक आम लोगों की नज़रों से ओझल थे।

इस किताब की सब से बड़ी खूबी यह है कि उस में जो भी बात कही गई है उसे हवालों से मुदल्लल बयान किया गया है। मज़ीद राकिम ने उन हवालों की तख़रीज के साथ साथ उन की अरूल इबारतें भी नक़ल करदी हैं जिस से पढ़ने वालों के लिए यह आसानी पैदा होगई है कि वह जब चाहें उन के माख़ज़ व मराजेअ की तरफ़



रुजूअ कर सकते हैं।

राकिम ने किताब में बअज़ मकामात पर हाशिये का भी इजाफा कर दिया है मक़सद यह है कि क़ारी के लिये "आसारे क़यामत" से मुतअल्लिक ज़्यादा से ज़्यादा मअलूमात फ़राहम कर दी जायें ताकि उन से इब़रत हासिल करते हुए अपने शब व रोज़ गुज़ारे जायें।

अल्लाह तबारक व तआला जुमला मुआवेनीन को जज़ा-ए-ताम अता फ़रमाये और इस किताब को मक़बूले ख़ास व आम ज़रीआ-ए-रुशद-व हिदायत अनाम और आख़िरत में मुझ नाचीज़ के लिये सबबे गाफ़िर असाम(गुनाहों से बख़्शिश का सबब) बनाये! आमीन बिजाहि सय्यदिलमुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व अला आलिही व असहाबिही अजमईन।

मुहम्मद अब्दुरहीम नशतर फ़ारुकी ख़ादिम मरकज़ी दारुलइफ़ता 82/  
सौदा ग़रान रज़ा नगर बरेली शरीफ़ यूपी।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

عن زيد بن واقد عن مكحول عن علي قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم : من اقتراب الساعة اذا رأيتم الناس أضاعوا الصلاة ، و أضاعوا الأمانة ، و استحلووا الكبائر ، و أكلوا الربا ، و أخذوا الرشى ، و شيدوا و البناء ، و أتبعوا الهوى ، و باعوا الدين بالدنيا ، و اتخذوا القرآن مزامير ، و اتخذوا جلود السباع صفاً ، و المساجد طرقاً و الحرير لباساً ، و كثر الجور ، و فشا الزنا ، و تهاونوا بالطلاق ، و ائتمن الخائن ، و خون الأمين ، و صار المطر قيظاً ، و الولد غيظاً و أمراء فجرة ، و وزراء كذبة ، و أمناء خونة ، و عرفاء ظلمة ، و قلت العلماء ، و كثر القراء ، و قلت الفقهاء ، و حليت المصاحف و زخرفت المساجد ، و طولت المنابر ، و فسدت القلوب ، و اتخذوا القينات ، و استحلوا المعازف ، و شربت الخمر ، و عطلت الحدود ، و نقصت الشهور ، و نقصت المواثيق ، و شاركت المرأة زوجها فى التجارة ، و ركب النساء البراذين ، و تشبهت النساء بالرجال و الرجال بالنساء ، و يحلف بغير الله ، و يشهد الرجل من غير أن يستشهد ، و كانت الزكاة مغرماً ، و الامانة مغنماً ، و أطاع الرجل امرأته و عقوق أمه و أقصى أباه و صارت الامارات موارث ، و سب آخر هذه الأمة اولها ، و أكرم الرجل اتقاء شره ، و كثر الشرط ، و صعدت الجهال المنابر و لبس الرجال التيجان ، و ضيقت الطرقات ، و شيد البناء و استغنى الرجال بالرجال و النساء بالنساء ، و كثر خطباء منابرهم ، و ركن علمائكم الى ولاتكم فاحلوا لهم الحرام و حرموا عليهم الحلال و أفتوهم بما يشتهون ، و تعلم علماءكم العلم ليحلبوا به دنانيركم و دراهمكم و اتخذتم القرآن



تجارة، وضيعتم حق الله في أموالكم، و صارت أموالكم عند شراركم، و  
 قطعتم أرحامكم، و شربتم الخمر في ناديتكم و لعبتم بالميسر، و ضربتم  
 بالكبر و المعرفة و المزامير، و منعتم محاويجكم زكاتكم و رأيتموها  
 مغرماً، و قتل البرئ ليغيظ العتاة بقتله و اختلفت أهواؤكم، و صار العطاء  
 في العبيد و السقاط، و طفف المكائيل و الموازين و وليت أموركم  
 السفهاء (أبو الشيخ في الفتن و عويس في  
 جزئه و الديلمي) (كنز العمال، جلد ۱۲، ص ۵۷۳/۵۷۴)

“हजरत जैद इब्ने वाकिद से रिवायत है, उन्होंने ने मक्हूल से  
 रिवायत की, उन्होंने मौला अली करमल्लाहु वजहुलकरीम से रिवायत  
 की। फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम ने कि  
 कुर्बे कयामत (कयामत के करीब) की निशानियों में से है, जब तुम देखो  
 लोगों ने नमाज को जाए कर दिया, और अमानत को राइगाँ (बर्बाद) कर  
 दिया, और कबीरा गुनाहों को हलाल ठहराया, और सूदखोरी और  
 रिश्वत सतानी (रिश्वत का लेन देन) की, और मकान पुख्ता बनाये, और  
 ख्वाहिशों की पैरवी की, और दीन को दुनिया के बदले बेचा, और  
 कुर्आन को <sup>(1)</sup> गाना ठहरा लिया, और जब तुम देखो लोगों ने <sup>(2)</sup> दरिन्दों  
 की खालों को बतौर जीन इस्तिअमाल किया, और

1. यअनी गाने के तौर पर उतार चढ़ाओ के साथ कुर्आन पढ़ेंगे या साज के साथ  
 कुर्आन की तिलावत करेंगे और गालिबन यह पिछली बात भी वाकैअ हो गई  
 और पहली तो कुरी-ए-जमाना में आम है, (अजहरी गुफिरलह)

2. इस से शेर वगैरा की खाल पर बैठने से मुमानअत (इन्कार) मअलूम होती है और यह  
 मुमानअत वअज हदीसों में वारिद हुई और अगर उस से मकसूद फखर व  
 मुयाहात हो तो उस से मुमानअत उस की तहरीम (हराम होने का) का फायदा देगी  
 (अजहरी गुफिरलह)



मस्जिदों को रास्ता बनालिया और मर्दों ने रेशम को पहनावा ठहरा लिया, और जब जुल्म ज्यादा हो, और जिना आम हो और तलाक़ मअमूली बात समझी जाये और खाइन के पास अमानत रखी जाये और अमीन को खाइन ठहराया जाये, और बारिश बाइसे-ए-<sup>(1)</sup> शिद्दते गर्मी हो जाये, और जब औलाद दिल की घुटन हो जाये, और बदकार उमरा और झूटे वज़ीर, और खाइन अमीर, और जालिम मुहत्तसिब हों, और उलमा अहले सरवत के लिए सीनों पर हाथ रख कर झुकें और कुरा ब-कसरत हों और फुक्हा की किल्लत हों, और मुसाहफ़ सोने चाँदी से मुजैयन किये जायें, और मस्जिदें आरास्ता की जायें और मिम्बर दराज़ किये जायें और दिल फ़ासिद हो जायें, और लोग गाने वालियाँ रखें, और बाजे हलाल ठहराये जायें, और शराबें पी जायें और अल्लाह के हुदूद मुअत्तल किये जायें, और महीने घट जायें और अहद व पैमान तोड़े जायें, और औरत अपने शौहर की तिजारत में शरीक हो, और औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें और औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें, और गैरुल्लाह की कसम खाई जाये, और आदमी गवाही में सब्कत करें बगैर उसके कि गवाही तलब की जाये, और ज़कात तावान ठहरे, और अमानत माले गनीमत, और मर्द अपनी बीवी की इताअत करे, और माँ की नाफरमानी करे, और बाप को दूर रखें, और ओहदे मीरास हो जायें, और इस उम्मत के पिछले लोग अगलों को <sup>(2)</sup> गालियाँ दें और आदमी की इज्जत उस के शर के डर से हो और सिपाहियों की कसरत हो, और जाहिल मिम्बर पर चढ़ें, और मर्द ताज पहनें, और रास्ते तंग हों, और रिहाइश के मकान ऊँचे पुख्ता

1. गलिबन मतलब यह है कि बारिश कम हो और खुश्क साली आम हो, या बारिश का असर यअनी सबज़ा और खुन्की हवा मुत्ताब न हो (अजहरी गुफिरलह)

2. इस के मिरदाक फ़ी जमानिना राफ़जी, खारिजी, वहाबी, देवबन्दी, नेचरी, कादयानी वगैराहुन और उन जैसे दीगर फिरकहा-ए-बातिला है (अजहरी गुफिरलह)



बनें, और मर्द मर्दों पर, और औरतें औरतों पर इक्तिफा करें, और तुम्हारे मिम्बर के खतीब ब-कसरत हों, और तुम्हारे उलमा तुम्हारे वालियों की तरफ झुकें, तो उन के लिये हराम हलाल ठहरा दें, और हलाल को हराम कर दें, और उन को मन चाहा फतवा दें और तुम्हारे उलमा इल्म इस लिए सीखें कि तुम्हारे रईसों के दीनार व दिरहम इकट्ठा करें, और तुम कुर्आन को तिजारत ठहरा लो, और तुम्हारे मालों में जो अल्लाह का हक है उसे जाए कर दो, और तुम्हारे माल तुम्हारे अशरार के कब्जों में हों, और तुम अपने रिश्तों को काटो, और अपनी मजिलसों में शराबें पियो, और जुआ खेलो, और तब्ला बजाओ और मजामीर के आलात बजाओ, और अपने मोहताजों को अपनी जकात न दो, और जकात को तावान समझो और बे गुनाह का कत्ल होता कि आम लोग उस के कत्ल से घटें, और तुम्हारे ख्यालात मुख्तलिफ हों, और बख्शिशें गुलामों में और कम मरतबा लोगों में आम हों, और पैमाने और तराजूएँ कम<sup>(1)</sup> हों और तुम्हारे उमूर के वाली बेवकूफ लोग हों।

1. यअनी कम तोलने का रिवाज आम हो जाये (अजहरी गुफिरलहू)



## जब लोग नमाज़ को जाए करने लगे

नमाज़ को जाए करना चन्द तौर से है। नजासत से परहेज न करे कपड़े में इस कदर नजासत हो जिस से नमाज़ फासिद हो जाती है या नापाक जगह में नमाज़ पढ़ने या वुजू सहीह तौर पर न हो या नमाज़ में कोई शर्त या रूकन अदा न हो या मआज़ल्लाह दिल तहारते बातिनी व नूरे ईमानी से खाली हो इस तरह कि अल्लाह व रसूल जल्ल व अला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तअज़ीम से खाली हो और जरूरियाते दीन में से किसी अग्रे जरूरी दीनी मसलन अल्लाह की पाकी, नबी के इल्मे गैब या खातिमुलअम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खतमे नुबुव्वत व गैरा का मुन्किर हो अगर्चे जबान से कलिमा पढ़ता हो और यह आखिरी सूरत बदतरीन हालत है।

जिस में नमाज़ ही को राइगाँ करना नहीं बल्कि ईमान को भी जाए करना है। आज कल इस के मिस्दाक वहाबिया, दयाबना, कादयानी, राफ़जी और तमाम मुन्किरीने जरूरियाते दीन हैं। उन्हीं के लिये मुख्वरे सादिक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने गैब की सच्ची खबर दी।  
 "एक ऐसी कौम नमाज़ पढ़ेगी जिस का दीन न होगा"।

उन तमाम सूरतों में नमाज़ असलन होती ही नहीं अगर्चे जाहिरी सूरत नमाज़ की देखने में आती है और नमाज़ को राइगाँ करने की यह सूरत भी है कि अस्लन नमाज़ न पढ़े और नमाज़ को जाए करना यह भी कि रूकूअ व सुजूद में तमानियत जो कि वाजिब है, न करे।

इसी तरह वाजिबाते नमाज़ में से कोई वाजिब छोड़ देना, या खशूअ व खुजूअ के बगैर नमाज़ पढ़ना, इन तमाम सूरतों में तज़ीअे सलात लाजिम आती (नमाज़ को जाए करने का हुक्म) है।

"बुखारी शरीफ" में हजरत हुजैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से



हदीस मरवी है कि उन्होंने ने देखा एक शख्स को कि रुकूअ व सुजूद कामिल तौर पर नहीं कर रहा था जब उस ने अपनी नमाज़ पूरी की तो हज़रत हुजैफा ने कहा तूने नमाज़ नहीं पढ़ी रावी का बयान है मैं गुमान करता हूँ कि हज़रत हुजैफा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख्स से कहा कि अगर तू इस हालत पर मरा तो सुन्नते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर न मरेगा।

हदीसे पाक के अल्फाज़ यह हैं।

**عن حذيفة انه رأى رجلا لا يتم ركوعه ولا سجوده فلما قضى صلاته قال له حذيفة ما صليت قال واحسبه قال لومت مت علي غير سنة محمد صلى الله عليه وسلم،، (بخاری شریف، جلد اول ص ۵۶)**

नमाज़ को ज़ाए करना यह भी है कि वक्त गुज़ार कर पढ़े, उसी "बुखारी शरीफ़" में हज़रत ज़हरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। वह कहते हैं कि मैं दमिश्क में अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में हाज़िर हुआ। वह रोते थे तो मैं ने अर्ज की कि आप के रोने का सबब क्या है? उन्होंने कहा मैं नबी अलैहिस्सलाम के ज़माने की कोई चीज़ नहीं पहचान सिवाये इस नमाज़ के और यह नमाज़ भी ज़ाए कर दी गई।

हदीस पाक के अल्फाज़ यह हैं।

**عن عثمان ابن رواذاخي عبد العزيز قال سمعت الزهري يقول دخلت علي انس بن مالك بدمشق وهويبيكي فقلت ما يبكيك فقال لا اعرف شيئا مما ادركت الا هذه الصلوة وهذا الصلوة قد ضيعت (بخاری شریف، جلد اول، ص ۱۷۶)**

यह हदीस नमाज़ को उस का वक्त गुज़ार कर अदा करने के बयान में इमाम बुखारी ने जिक्र की। नीज़ तबरांनी में उन्हीं अनस इब्ने



मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की फरमाते हैं फरमाया हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम ने जो नमाजें उनके वक्तों पर पढ़े और उन का वुजू कामिल हो और नमाजों में कयाम खुशूअ व रुकूअ व सुजूद कामिल तौर पर करे तो उस की नमाज सफेद चमकती हुई निकलती है कहती है अल्लाह तेरी हिफाजत करे जिस तरह तूने मेरी हिफाजत की और जो ना वक्त पर नमाज पढ़े और वुजू कामिल न करे और न खुशूअ व रुकूअ व सुजूद तमाम करे तो उस की नमाज निकलती है सियाह अँधेरी, कहती है अल्लाह तुझे जाए करे जैसा कि तूने मुझे जाए किया यहाँ तक कि पुराना कपड़ा लपेट दिया जाता है फिर उस नमाजी के मुँह पर मारी जाती है।

इसी के हम मअना इजरत इबादा इब्ने सामित से मरवी है और कअब इब्न अजरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है। फरमाया हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम जलवा गर हुए और हम सात नफर थे। चार हमारे आजाद करदा गुलामों में से और तीन हमारे अरबों में से। हम लोग हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम की मरिजद पर अपनी कमर टिकाये थे फरमाया तुम लोग किस लिये बैठे हो? हम ने अर्ज किया हम बैठे हैं नमाज के इन्तिजार में तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम थोड़ी देर ठहरे फिर हम पर तवज्जह फरमाई तो फरमाया क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा रब क्या फरमाता है? हम ने अर्ज किया नहीं फरमाया तो जान लो कि तुम्हारा रब फरमाता है जो पाँचों नमाजें उन के वक्तों पर पढ़े और इन नमाजों की पाबन्दी करे और उन के आदाब की हिफाजत करे और नमाजों को जाए न करे और नमाजों को नाहक तसाहुल से जाए न करे तो इस के लिए मेरे ऊपर अहद है कि मैं उस को जन्नत में दाखिल करूँ और जो उन नमाजों को उन के वक्तों पर न पढ़े और उन के आदाब की हिफाजत न करे और नाहक तसाहुल(सुरस्ती) से



उन्हें जाए कर दें तो उस के लिये मेरे ऊपर कोई  
अहद नहीं। चाहूँ तो अज़ाब दूँ और चाहूँ तो बख्श दूँ।

हदीसे पाक के अल्फाज़ यह हैं।

وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى  
اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلَّى الصَّلَوَاتِ لَوَقْتِهَا وَ  
اسْبَغَ لَهَا وَضُوءَهَا وَاتَمَّ لَهَا قِيَامَهَا وَخَشَعَهَا وَرُكُوعَهَا  
وَسُجُودَهَا خَرَجَتْ وَهِيَ بِيَضَاءٍ مَسْفُورَةٌ تَقُولُ حَفِظَكَ اللَّهُ  
كَمَا حَفِظْتَنِي وَمَنْ صَلَّى لَغَيْرِ وَقْتِهَا وَلَمْ يَسْبِغْ لَهَا وَ  
ضُوءَهَا وَلَمْ يَتِمَّ لَهَا خَشُوعَهَا وَلَا رُكُوعَهَا وَلَا سُجُودَهَا  
خَرَجَتْ وَهِيَ سُودَاءٌ مَظْلَمَةٌ تَقُولُ ضَيَعَكَ اللَّهُ كَمَا  
ضَيَعْتَنِي حَتَّى إِذَا كَانَتْ حَيْثُ شَاءَ اللَّهُ لَفَتْ كَمَا يَلِفُ  
الثَّوْبُ الْخُلُقَ ثُمَّ ضَرَبَ بِهَا وَجْهَهُ رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي  
الْأَوْسَطِ وَفِيهِ عِبَادِينَ كَثِيرٌ وَقَدْ أَجْمَعُوا عَلَى ضَعْفِهِ. قُلْتُ  
وَيَأْتِي حَدِيثُ عِبَادَةِ بَنِي حَوْزَةَ فِي بَابٍ مِنْ لَا يَتِمُّ صَلَاتُهُ وَ  
يَسْبِغُ رُكُوعَهَا وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عَجْرَةَ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا  
رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ سَبْعَةٌ نَقِرُ  
أَرْبَعَةً مِنْ مَوَالِينَا وَثَلَاثَةً مِنْ عَرَبِنَا مُسْنَدِي ظُهُورِنَا إِلَى  
مَسْجِدِهِ فَقَالَ مَا أَجْلَسَكُمْ قُلْنَا جَلَسْنَا نَنْتَظِرُ الصَّلَاةَ قَالَ  
فَأَرَمَ قَلِيلًا ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا فَقَالَ هَلْ تَدْرُونَ مَا يَقُولُ رَبُّكُمْ  
قُلْنَا لَا قَالَ فَإِنْ رَبُّكُمْ يَقُولُ مَنْ صَلَّى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ  
لَوَقْتِهَا وَحَافِظَ عَلَيْهَا وَلَمْ يَضِيعْهَا اسْتَخْفَافًا لِحَقِّهَا فَلَهُ  
عَلَى عَهْدَانِ ادْخُلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ لَمْ يَصِلْهَا لَوَقْتِهَا وَلَمْ  
يَحَافِظْ عَلَيْهَا وَضِيعَهَا اسْتَخْفَافًا بِحَقِّهَا فَلَا عَهْدَ لَهُ عَلَى  
أَنْ شِئْتُ عَذِّبْتُهُ وَأَنْ شِئْتُ غَفَرْتُ  
لَهُ“ (مَجْمَعُ الزَّوَائِدِ، جُلْدِ أَوَّلٍ، ص ۳۰۲)

इस हदीस को रिवायत किया तबरांनी ने "औसत" में और



“कबीर” में इमाम अहमद के अल्फाज यूँ हैं : रावी ने कहा उस दौरान कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मस्जिद में बैठा था। हम लोग हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मस्जिद की तरफ अपनी कमर टिकाये थे। इतने में हजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हुजरा—ए—मुकद्दसा से बाहर तशरीफ लाये नमाजे जोहर के वक़्त में तो फ़रमाया तुम लोग इला आखिरिही। इस के बाद इमाम अहमद ने मज़कूर वाला हदीस के हम मअना रिवायत की।

## जब अमानत राइगाँ कर दी जाये

यअनी अमानत को उस के मुस्तहक तक न पहुँचाया और हदीस में लफ़्जे अमानत आम है जो माल इल्म, अमल सब को शामिल है।

“तफ़सीरे खाजिन” में जेरे आयते करीमा :

”إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا.” यअनी

“बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सुपुर्द करो” (फार 5/सूराए निहा आयात 85 मन्जुलइमान)

यह आयत तमाम अमानत को शामिल है तो उस के हुक्म में हर वह अमानत दाखिल है जिस की जिम्मा दारी इनसान को सौंपी गई है और यह तीन किरम पर है:

पहली यह कि अल्लाह की अमानत को मलहूज रखे और यह अल्लाह के अहकाम बजालाना और ममनूआत से परहेज करना है। हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद का कौल है कि अमानत हर शय में लाजिम है यहाँ तक कि वुजू और जनाबत से पाकी के लिये गुस्ल नमाज़, ज़कात, रोजा, और हर किरम की इबदत में।

दूसरी किरम यह है कि बन्दा अपने नफ़स में अल्लाह की अमानत मलहूज रखे और वह अल्लाह की वह नेअमते हैं जो अल्लाह ने बन्दे के तमाम अअजा में रखी हैं तो जबान की अमानत यह है कि



जुबान को झूट गीबत चुगली बगैरा खिलाफे शरअ बातों से महफूज रखे और आँख की अमानत यह है कि मुहरमात पर निगाह से आँख को बचाये और कान की अमानत यह है कि लग्न वे हयाई और झूटी बातें और उस के भिरल खिलाफे शरअ बातें सुनने से परहेज करे।

तीसरी किस्म यह कि बन्दा अल्लाह के बन्दों के साथ गुजामलात में अमानत का लिहाजा रखे लिहाजा उस पर वदीअत और आरियत का उन लोगों को लौटाना जरूरी है जिन्होंने ने उस के पास यह अमानतें रखीं और उस में उन के साथ खियानत करना मनअ है।

हजरत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्दु से हदीस मरवी है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अमानत उस को पहुँचा जिस ने तेरे पास अमानत रखी और उस के साथ खियानत न कर जिस ने तेरे साथ खियानत की"।

**“رواه ابوداؤد و ترمذی فقال حدیث حسن غریب”**

यअनी इमाम तिर्गिनी **ANNATMAUN** हदीस हसन गरीब है।

इसी में नाप और तोल को पूरा करना दाखिल है। लिहाजा उन में कमी करना हराम है और उस के उमूम में अमीरों और बादशाहों की रईयत(प्रजा)के साथ और उलमा का आम मुसलमानों के साथ खैरख्याही दाखिल है तो यह तमाम चीजें इस अमानत की कबील से हैं जिस का उन ने मुस्तहकीन को पहुँचाने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया।

अल्लामा बगवी ने अपनी सनद से रिवायत की। फरमाते हैं कम ऐसा हुआ कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुल्वा दिया और यह न फरमाया हो कि उस का ईमान नहीं। जिस के पास दियानत दारी नहीं। और उस का दीन नहीं जिस को अहद का पास नहीं"।

अल्लामा मौसूफ के अल्फाज यह हैं



”عن انس قال فلما خطبنا رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم الا قال لا ايمان لمن لا امانة له ولا دين لمن لا عهد له“ (تفسير خازن، جلد اول، ص ۳۷۱)

अकूलु(मैं कहता हूँ) उलमा की आम मुसलमानों के साथ खैर खाही यही है कि वह अल्लाह व रसूल(जल्ल व अला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)के अहकाम उन तक पहुँचायें और अहल को वह इल्म सिखायें जो उन के पास उस की अमानत है उस को छुपालेना अमानत को जाए करना है<sup>1</sup>:

1.अमानत की बर्बादी इस तरह भी होगी कि हर काम नाअहलों के सुपुर्द हो जायें। चुनाँचे हजरत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है वह फरमाते हैं :

بينما النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يحدث اذ جاء اعرابي فقال متى الساعة قال اذا ضيعت الامانة فانتظر الساعة قال كيف اضاعها قال اذا وسد الامر الى غير اهله فانتظر الساعة

यअनी उस दौरान कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम गुफतुगू फरमा रहे थे एक एअराबी आया और अर्ज किया कि कयामत कब आयेगी? हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: जब अमानत बर्बाद की जाने लगे तो तुम कयामत का इन्तिजार करो। उस ने सवाल किया अमानत की बर्बादी किस तरह होगी? इरशाद हुआ जब हर काम नाअहलों को सौंपा जाने लगे तो तुम कयामत का इन्तिजार करो(मिशकात शरीफ स. 469) नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यह पेशीनगोई भी इस जमाने में जाहिर होने लगी है चुनाँचे हम आज देख रहे हैं कि हुकूमत व सलतनत ऐसे लोगों के हाथ में है जो किसी तरह भी उस के अहल नहीं। उसी तरह गाँव की सरदारी व प्रधानी नालाइकों के सुपुर्द है हद तो यह कि मसाजिद की तोलियत और उन का निजाम व इन्सिराम भी ऐसे ऐसे बे नमाजी और दुनियादार मालदारों व सेठों के हाथ है जो उमूमन ईद व बकरईद की नमाज पढ़ लेते हैं या कभी कभी जुमआकी नमाज के लिये मस्जिदों में आजाते हैं यूँही दीनी दर्सगाहों और दीगर कौमी इदारों के अअला ओहदेदारान (बाकी अगलेसफा पर)



इमाम जलालुद्दीन सियूती ने अपनी किताब "अललालीयुलमसनूआ" में अपनी सनद से सरकार से रिवायत किया।

**”عن عباس قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم تناصحوا في العلم ولا يكتنم بعضكم بعضا فان خيانة في العلم اشد من خيانة في المال .“**

यअूनी "हजरत अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया : फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कि इल्म के मुआमले में खैर ख्वाही से काम लो और कोई किसी से इल्म न छुपाये इस लिये कि इल्म में खियानत माल में खियानत से सख्त तर है" (जिल्दे अब्बल, स 208)

तकरीरे बाला (ऊपर लिखे मजमून)से रौशन हो गया और अदाए फर्जियत व अमानत का मअूना खूब रौशन हो गया और यह भी मअूलूम हो गया कि अमानत जो जाए करना उन तमाम मजकूरा सूरतों (जिक की हुई सूरतों)को शामिल है यह दहने मुबारक (मुँह मुबारक)से निकले हुए एक कलिमे की जामेइय्यत और उस में कसरते मअानी (ज्यादा मअना)का यह हाल है कि किसी का बयान इस का इहात्ता नहीं कर सकता

में निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किसी को जबाँ नहीं। वह सुखन है जिस में सुखन न हो वह बयाँ है जिस का बयाँ नहीं

"इल्म को छुपाना" इस इस से मुराद यह है कि अहल से पोशीदा न रखे जैसा कि तकरीरे बाला में गुजरा और खुद आयते मसलन नाजिमे अअला और सिकेंटरी का ओहदा ऐसे लोगों के सुपुर्द किया जा रहा है जो इल्मे दीन और कौम के मसाइल व जरूरियात से कतई नाबलद हैं।

जाहिर सी बात है अगर अच्छी से अच्छी चीज भी ना अहलों के हाथ में पहुँच जाये तो वह बद से बदतर हो ही जायेगी। गर्ज कि इस जमाने का हर काम नाअहलों और नालाइकों के सुपुर्द है लेकिन फिर भी खुदा का फजल है कि कुछ लोग अभी उन ओहदों के लाइक और अहल मौजूद हैं (फारुकी गुफिरलह)



करीमा से यह कैद सराहतन जाहिर है और बिलाशुबह यह माल में खियानत से ज्यादा सख्त है कि बअज सूरतों में इल्म के छुपाने से नोबत कुफ तक पहुँचती है जैसे हुजूर के बड़े मशहूर बहुत फजाइल कसीरा को छुपाना और उन के बजाये ऐसी बातें बयान करना जिस से तन्कीसे शान रिसालत होती है (नबी की शान में कमी होती है) यह अगले ज़माने में यहूदियों की खसलत थी और अब उस के मिस्दाक वहाबिया, दियोबन्दी वगैरा हुमा हैं।

सरकारे अबद करार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : हर उम्मत में कुछ लोग यहूदी हैं और मेरी उम्मत के यहूदी तकदीरे इलाही के झुटलाने वाले हैं। (अललालियलमसनूआ)

मफहूमे हदीस से खूब जाहिर कि कुछ लोगों को सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तकज़ीब (झुटलाना) और कितमाने हक (हक को छुपाना) की वजह से यहूदी फरमाया तो वहाबिया वगैराहुम जो हुजूर अलैहिस्सलातु वसल्लाम के इल्मे गैब ही के मुन्किर हैं और दानिस्ता फजाइल छुपाते हैं और जरूरियाते दीन को नहीं मानते यह भी बिला शुबह इस हदीस के मिस्दाक हैं और वह हदीस जिस में फरमाया कि उस का ईमान नहीं जिस के पास दियानत नहीं उन मुन्किरीन के हक में अपने जाहिरी मअ्ना पर है तो उन की कलिमा गोई असलन उन्हें मुफीद नहीं।

ज़ियाबुन फी सियाबिन लब पे कलिमा दिल में गुस्ताखी

सलाम इस्लामे मुलहिद को कि तस्लीम ज़बानी है

यहाँ से जाहिर हुआ कि हदीस में कुर्ब कियामत की निशानियों में जो यह फरमाया कि कबीरा गुनाहों को हलाल ठहरायेंगे, यह (जुमला) फ़िकरए साबिका से मरबूत (तअल्लुक होना) है और दोनों में अलाका सबब व मुसबब का है। यअ्नी जब अमानत उन से मसलूब हो जायेगी तो उस का जाए करना यही है कि वह कबीरा गुनाहों में बे परवाही के साथ मुब्तला हो जायेंगे या मअज़ल्लाह उन्हें दिल से



हलाल जान कर ईमान से दूर और दीन से बे ज़ार हो जायेंगे।

हदीस दोनों मअना को शामिल है और दोनों फरीक हदीस के अलग अलग महमल के एअतिबार से हदीस के मिस्दाक हैं और दूसरा फरीक यअनी जो महरमात कतईया को हलाल जाने मसलूबुल (छीनलीजायेगी)अमानत ईमान से महरूम इस्लाम से खारिज हैं और अल्लाह की अजमत के लिहाज से हर गुनाह और हर मअसियत कबीरा है अगर्चे बअज मआसी बमुकाबिला बअज कबीरा हैं और बअज सगीरा है और कबीरा की जामेअ तअरीफ़(ज्यादा सहीह तअरीफ़)यह है कि वह हर ऐसी मअसियत है जिस के मुरतकिब पर किताब व सुन्नत में वर्ददे शदीद आई और जिस के इरतिकाब से अदालत साकित हो जाती है। जैसे सूदखोरी यतीम का माल खाना, माँ बाप की नाफरमानी, कतअे रहम, जादू, चुगली, झूठी गवाही, और हाकिम के पास नाहक लोगों की शिकायत करना, जिना की दलाली और महारिम के मुआमला में बे गैरती वगैरा यूँ ही वह गुनाह जिस के मुरतकिब पर लअनत वारिद हुई उसी तरह हर सगीरा जिस पर इसरार(बा-बार करना) करे और बार बार उस का मुरतकिब हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं

**لا كبيرة مع الاستغفار ولا صغيرة مع الاصرار.**

यअनी "इस्तिग़फ़ार के साथ कोई गुनाह कबीरा नहीं रहता और इसरार के साथ कोई गुनाह सगीरा नहीं रहता" (फैजुलकदीर जिल्द 6 स. 436 )



## जब सूद खोरी की जाने लगे

यअनी कुर्बे कयामत के आसार में से एक निशानी यह भी है कि सूद खोरी आम तौर पर मुसलमानों में पाई जायेगी। मुसलमान एक दूसरे से सूद का लेन देन करेंगे यअनी नाप तोल वाली जिन्स को जैसे गेहूँ, सोना, चाँदी वगैरा उसी जिन्स के बदले तफाजुल (ज्यादा लेना) के साथ बेचेंगे ज्यादा लेने की शर्त पर मुसलमान मुसलमान को उधार देगा<sup>(1)</sup>

यहाँ से मअ्लूम हुआ कि सूद मुसलमान और मुसलमान, या मुसलमान और जिम्मी के दरमियान माले मअ्सूम में होता है और उस पर खुद हदीस का पहला फिकरा कि "नमाज को जाए करेंगे" करीना है

नीज इस हदीस में तसरीह फरमाई कि मुसलमान और हरबी काफिर के दरमियान सूद नहीं। लिहाजा आज कल कुफ़ार से ज्यादा लेना सूद की हद में नहीं आता लिहाजा उन से बगैर बद अहदी के जो कुछ जिस तरीके से मिले वह मुसलमान के लिये जाइज है।

1. हजरत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि

**قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يأتي على الناس زمان لا**

**يأبى الى المرء ما اخذ منه امن الحلال ام من الحرام.** यअनी फरमाया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लोगों पर एक ऐसा जमाना आयेगा कि लोग यह खयाल न करेंगे कि उन्होंने ने हलाल हासिल किया या हराम" (मिशकात शरीफ स. 241)

चुनाँचे आज बअज लोग यह कहते नजर आते हैं कि "आज कल तो हलाल मिलता ही नहीं" "चूँकि हलाल में फुजूल खर्ची और ऐश व मस्ती की गुन्जाइश नहीं रहती। इस लिये लोग यह तावील कर लेते हैं। कि आज कल तो हलाल मिलता ही नहीं"

हालाँकि हदीसे पाक में उस की सख्त वईद वारिद है चुनाँचे फरमाया

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने : (बाकी अगले सफा पर)

**لا يدخل الجنة لحم نبت من السحت و كل لحم نبت من السحت**  
**كانت النار اولى به.** (बाकी अगले सफे पर)



## जब रिश्वत का लेन देन आम होने लगे

फिर सर कार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने कुर्बे कयामत की एक और निशानी यह बताई कि रिश्वत का लेन देन लोगों में आम होगा गोया उन के नज्दीक वह मअमूली बात हो हालाँकि अल्लाह व रसूल (जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) के नज्दीक मअमूली बात नहीं बल्कि सख्त हराम है<sup>(1)</sup>

यअनी "जन्नत में वह गोश्त नहीं जायेगा जो माले हराम से बना और जो गोश्त हराम से बना हो दोजख उस की ज्यादा मुस्तहक है," (मिशकात शरीफ स 242)

अगर लोग तक्वा शिआरी के जरीआ रिजके हलाल कमाने की फिक करें तो जो मुश्किलात कसबे हलाल में पेश आ रही हैं हर्गिज न आवें मगर हमारा हाल तो यह है कि जो भी हो जैसे भी हो हलाल हो, हराम हो बस हजम करते जाओ (फारूकी गुफिरलहू)

1. रिश्वत खोरी इस कदर आम हो चुकी है कि अपने को मजहबी और कौमी हमदर्द कहलाने वाले भी रिश्वत को हदिया का ताम देकर हलाल समझने लगे हैं हालाँकि फुकहा-ए-किराम ने साफ़ तस्रीह फरमादी है कि जो शख्स किसी को उस के ओहदे पर फाइज होने से पहले रिश्ता दारी वगैरा में कुछ लिया दिया करता था तो उस का लेना जाइज है और ओहदा पर फाइज होने के बाद लोग जो भी देते हैं सब रिश्वत है।

استعمل النبي صلى الله عليه وسلم رجلا من الازد من  
يقال له ابن اللتبية على الصدقة فلما قدم قال هذا لكم وهذا هدى لى  
فخطب النبي صلى الله عليه وسلم فحمد الله واثنى عليه ثم قال  
اما بعد! فانى استعمل رجالا منكم على امور مما ولا نى الله فيأتى  
احدهم فيقول هذا لكم وهذه هدية اهديت لى فهلا جلس  
فى بيت ابيه او بيت امه فينظر ايهدى له ام لا .

यअनी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कबीला अज्द के इब्ने

लुतयिया नामी एक शख्स को जकात वसूल करने को भेजा जब वह जकात (बाकी अगले सफे पर)



कुर्आन शरीफ में उस की हुसमत मुसररह(जाहिर तौर बयान की गई) है और हदीस में फरमाया।

**لعن الله الراشي والمرتشى.** यअनी "अल्लाह की लअनत है रिश्वत लेने और देने वाले पर" (मुसनदे इमाम अहमद जिल्द 2 स 387)

यअनी " रिश्वत लेने वाला मुतलकन मुस्तहक लअनत है और देने वाला भी उसी रस्सी में गिरफ्तार है जब कि नाजाइज काम के लिए रिश्वत दे या बगैर मजबूरी के दे और दफअे जुल्म(जुल्म से बचने) और जाइज हक की तहसील(हक हासिल करने के लिए) के लिए जब रिश्वत दिये बगैर चारा न हो तो यह सूरत मुस्तसना है और देने वाला इस वर्ईद का मिस्दाक नहीं।

वुसूल कर के लाया तो अजं किया कि यह बैतुलमाल का है और यह मुझे हदिया दिया गया है यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुत्बा दिया और हम्द व सना के बाद इरशाद फरमाया : मैं तुम में से वअज लोगों को उन कामों पर मुकरर करता हूँ जिन का अल्लाह ने मुझे मुतवल्ली बनाया है तो उन में से एक आकर कहता है कि यह तुम्हारा है और यह मुझे हदिया दिया गया है तो वह अपने बाप के या माँ के घर क्यों न दैठ गया फिर देखता कि उसे हदया मिलता है या नहीं"। स 156

इस हदीसे पाक से बाजेह हुआ कि जो चीज ओहदे की वजह से मिले वह रिश्वत है (फारुकी गुफिरलह)



## जब कुर्आन को गाना ठहरा लिया जाये

यअनी तजवीद के कवाइद का लिहाज नहीं रखेंगे और किरात का जो तरीका सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जमाने से मुतवारिस(चला आ रहा है) है उस की पैरवी न करेंगे यअनी गाने के तौर पर उतार चढ़ाओ के साथ कुर्आन पढ़ेंगे या साज के साथ कुर्आन की तिलावत करेंगे।

बल्कि " इतकान फी उलूमिलकुर्आन लिल इमाम जलालुद्दीन सियूती" में है कि लोगों ने तिलावते कुर्आन में गानों की आवाजें ईजाद कर लीं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों के बारे में फरमाया कि उन के दिल फितनों में हैं और जिन्हें उन का हाल पसन्द हो उन के दिल भी फितने में हैं"।

जो तर्ज उन्होंने ने ईजाद किए उन में से एक का नाम 'तरईद' रखा और वह यह है कि कारी काँपती हुई आवाज बनाये गोया वह ठन्डक से या तकलीफ से काँप रहा है और दूसरी तर्ज का नाम "तरकीस" रखा और वह यह है कि हर्फ साकिन पर सुकूत (खामोशी)का इरादा करे फिर वहाँ से हरकत के साथ चल पड़े गोया वह दौड़ लगा रहा है या तेज़रफ़्तारी में है।

एक तर्ज और निकाला है जिस का नाम "ततरीब" रखा और वह यह है कि कुर्आन करीम को तरन्नुम से और लहन से पढ़े उस तौर पर कि जहाँ मद नहीं किया जाता वहाँ मद करे और मद में बे जा खिलाफे काइदा ज्यादाती करे और एक तर्ज का नाम "तहजीन" है और वह यह कि कुर्आन करीम गमगीन अन्दाज़ में पढ़े जैसे खशूअ व खजूअ के साथ रो देता हो।

इमाम सियूती के अल्फाज़ यूँ हैं :

قد ابتدع الناس قراءة القرآن اصوات الغناء (الى ان قال) وقد قال في هؤلاء مفتونة قلوبهم وقلوب من يعجبهم شأنهم ومما ابتدعوه شئ



سموه الترعيد وهو أن يرعد صوته كأنه يرعد من برداً و ألم و آخر  
 سموه الترقيص وهو أن يروم السكوت على الساكن ثم ينفرد من  
 الحركة كأنه في عدو أو هرولة و آخر يسمى التطريب وهو أن يترنم  
 بالقرآن و يتغنم به فيمد غير مواضع المدويز دفي المد على ما لا  
 ينبغى و آخر يسمى التحزين وهو أن يأتي على وجه حزين يكاد يبكي  
 مع خشوع و خضوع. (اقتان جزء ثانی ص ۱۰۱)

अकूलु(अल्लामा अजहरी फरमाते हैं)उस में कोई हरज न होना  
 चाहिए जब कि तजवीद के साथ पढ़ें और क्वाइदे किरात(किरात के  
 नियमों)का लिहाज रखे, दिखावा उकसूद न हो, बल्कि बे साख्ता रिक्त  
 तारी(रोने जैसी हालत) हो जाये इस लिये कि उलमा ने तस्रीह फरमाई  
 उन में इमाम जलालुद्दीन सियूती भी हैं जो उसी "इत्कान"में फरमाते हैं  
 कि किराते कुर्आन(कुर्आन पढ़ने)के वक्त रोना मुस्तहब है और जो रोने  
 पर कादिर न हो वह रोनी सूरत बनाये और हुजन व  
 खुशुअ तिलावत के वक्त मद्दूब व महबूब(बेहतर) हैं।

قال الله تعالى:  
 "وَيَخْرُونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ"

यअनी "और ठोड़ी के बल गिरते हैं रोते हुये"

(पारा न. 15/चुरण असरा आयत 109)

और सहीह न में वह हदीस है जिस में हजरत अब्दुल्लाह इब्ने  
 मसऊद का नबी अलैहिस्सलाम के लिये कुर्आन पढ़ना  
 मजकूर है इस में है कि हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु  
 तआला अन्हु ने देखा कि नागाह हुजूर की आँखों से अशक रवाँ थे।

और बैहकी "शोअबुलईमान"में सअद इब्ने मालिक से मरफूअन  
 रिवायत है कि बेशक कुर्आन हुजन व बे चैनी की हालत उतरा है तो  
 जब तुम उस को पढ़ो तो रोओ फिर अगर तुम्हें रोना न आये तो रोनी  
 सूरत बनाओ और उसी में अब्दुलमालिक इब्ने उमैर की मुरसल



अहादीस में से एक हदीस है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम पर एक सूरत तिलावत करता हूँ तो जो रोये उस के लिये जन्नत है फिर अगर तुम्हें रोना न आये तो राते बनों" (रोने जैसी सूरत बनालों) ।

और मुस्नदे अबू यअूला में है कि: "कुआन को हुज्ज के साथ पढ़ो इस लिये कि वह हुज्ज के साथ उत्तरा" और तबरानी में है कि "लोगों में सब से अच्छा कारी वह है जो क़आन पढ़े तो गमगीन हो" ।

और "शरहुल मुहज्जब" में फरमाया कि: तहसीले गिरया (रोने की हालत हासिल करने) का तरीका यह है कि जो पढ़ रहा है उस में तहदीद व वईद शदीद और जो अहद व पैमान (डर और गुनाह पर सख्त अजाब का वयान) हैं उन में गौर करे फिर अपनी कोताही याद करे अब भी अगर रोना न आये और गमगीन न हो तो उस बात के न भिलने पर रोये इस लिये कि यह मसाइब में से है ।

अल्लामा सियूती ~~कहते हैं~~ शरहुल मुहज्जब के अल्फाज़ यह हैं ।

يستحب البكاء عند قراءة القرآن والتبالي لمن لا يقدر عليه والحزن والخشوع قال تعالى ويحزون للأذقان يبكون وفي الصحيح حديث قراءة ابن مسعود على النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وفيه فاذا عيناه تذر فانوفي لشعب للبيهقي عن سعد ابن مالك مرفوعاً أن هذا القرآن نزل يحزن و كآبة فاذا قرأ تموه بكوا فان لم تبكوا فتباكوا وفيه من مرسل عبد الملك بن عمير أن رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قال أنى فارئ عليكم سورة فمن بكى فله الجنة فان لم تبكوا فتباكوا، وفي مسند أبى يعلى حدث أقرؤ القرآن بالحزن فانه نزل بالحزن وعند الطبراني أحسن الناس قراءة من اذا قرأ القرآن يتحزن قال فى شرح المذهب وطريقه فى



تحصيل البكاء أن يتأمل ما يقرأ من التهديد و عید  
الشديد و الموائيق و العهود ثم يتفكر فی تقصيره فیها  
فان لم يحضره عند ذلك حزن و بكاء فلیبک علی فقد  
ذلك فانه من المصائب (اتقان جزء ثانی ۱۰۷)

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती फरमाते है कि उसी(मजकूरा  
तरजों)के कबील से एक बिदअत यह है कि बहुत से लोग इकट्ठे हो  
ब-एक आवाज़ पढ़ते हैं “أفلا تعقلون” और  
पढ़ते “قال آمنا” (बिगैर वाव के) साथ (बिगैर वाव के) वाओ के हज़फ़ के साथ  
हैं जहाँ मद नहीं वहाँ मद करते हैं ताकि जो उन्होंने अपनाया उन का  
तरीका बन जाये और मुनासिब यह है उस का नाम तहरीफ़ रखा जाये।

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती अलैहिर्रहमा के अल्फ़ाज़ यह हैं  
ومن ذلك نوع أحدثه هؤلاء الذين يجتمعون فيقرؤون كلهم  
بصوت واحد فيقولون في قوله تعالى “أفلا تعقلون” أفلا  
تعقلون “بحذف الالف” قال آمنا “بحذف الواو يمدون ما لا  
يمد ليستقيم لهم الطريق التي سلکوها وينبغي أن يسمى  
التحريف انتهى. (اتقان، جزء ثانی، ص ۱۰۲)

अकूलु(अल्लामा अज़हरी फरमाते हैं) बे शक तहरीफ़ है और क़रदन  
उस तौर पर पढ़ने वाला मुस्तद्क़े तहरीफ़ क़रार पायेगा।

यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि मुजर्रद तहसीनी सौत और खुश  
इलहानी जब कि ज़्यादती व नुक़सान हुरूफ़ और मद मुफ़रत और  
तमतीत (बेजा खीचतान) (अच्छी आवाज़ और अच्छी तर्ज जब कि हर्फ़  
की कमी और ज़्यादती और बेजा खींच तान न हो तो हरज नहीं)से  
पाक हो और क़वाइदे कुर्आन की रिआयत की जाये तो उस में हरज  
नहीं बल्कि यह मसनून है।

हदीस इब्ने हब्बान वगैरा में है :

”زينوا القرآن باصواتكم وفي لفظ عند الدارمي حسنوا



القرآن بأصواتكم فإن الصوت الحسن يزيد القرآن حسنا وأخرج البزار وغيره حديث حسن الصوت زينة القرآن وفيه أحاديث صحيحة كثيرة فإن لم يكن حسن الصوت حسنه ما استطاع بحيث لا يخرج الى حد التمطيط.

यअनी 'कुर्आन को अपनी आवाजों से मुजैयन करो और दारमी की एक रिवायत में है कुर्आन को अपनी आवाजों से सँवारों इस लिये कि अच्छी आवाज कुर्आन के हुस्न को बढ़ाती है और बज़ार वगैरा ने हदीस रिवायत की कि : अच्छी आवाज कुर्आन की जीनत है और अगर कारी खुश आवाज न हो तो जहाँ तक हो सके अच्छी आवाज बनाये पिरोने की कोशिश में 'तमतीत' की हद तक न पहुँचे (इत्कान जुज सानी स. 107)

यहाँ से मअ्लूम हुआ कि 'तमतीत' जो नाजाइज है वह यह है कि मद में बहुत मुबालगा करे और हरकात के अश्बाअ में मुबालगा करे यहाँ तक कि ज़बर से 'अलिफ़' पेश से 'वाओ' ज़ेर से 'या' नुमाया हो जाये या जहाँ इदग़ाम का महल नहीं वहाँ इदग़ाम करे (एक हर्फ़ को दूसरे में मिलाने की जगह नहीं वहाँ मिलाकर पढ़ना मद को मद की मिकदार से ज़्यादा खींच कर पढ़ना ज़बर वाले हर्फ़ को इस तरह पढ़े कि अलिफ़ हो जाये पेश को इस तरह कि वाओ और ज़ेर को इस तरह कि य हो जाये यह सब तमतीत है जो नाजाइज है)।

नीज हदीस में है सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

”اقرأ القرآن بلحون العرب وأصواتها وإياكم ولحون أهل الكتابين وأهل الفسق فإنه سيجيء أقوام يرجعون بالقرآن ترجيع الغناء والرهبانية (وفي نسخة والنوح) لا يجاوز حناجرهم مفتونة قلوبهم وقلوب من يعجبهم



## شانهم أخرجہ الطبرانی والبیہقی ۱

यअनी कुर्आन को अरबों के तर्ज और उन की आवाज़ के साथ पढ़ो और यहूद व नसारा के तर्ज से अपने आप को दूर रखो और अहले फिरक<sup>(2)</sup> के तर्ज से बचो इस लिये कि कुछ ऐसे आयेंगे जो कुर्आन में गाने की तरह "तरजीअ" (उतार चढ़ाव) से काम लेंगे और अहले रहबानियत के तौर पर पढ़ेंगे कुर्आन उन के गलों से नीचे न उतरेगा उन के दिल फितनों में पड़े हैं और उन के दिल भी जिन्हें उन का यह हाल भला लगता हो इस हदीस को तबरानी और बैहकी ने रिवायत किया (इत्कान जुज सानी स. 107)

1. इस हदीस पाक को साहिबे मिश्कात ने स. 191/पर और साहिब "तैसीर" ने जिल्द/2 स. 194 पर हज़रत अबू हुज़ैफा रदियल्लाहु तआला अन्हु से इन अल्फाज के साथ रिवायत किया :

قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم اقرأ القرآن بلحون العرب واصواتها واياكم ولحون اهل العشق ولحون اهل الكتابين وسيجيى بعدى قوم يرجعون بالقرآن ترجيع الغناء والرهبانية والنوح لا يجاوز حناجرهم مفتونة قلوبهم وقلوب الذين يعجبهم شانهم

यअनी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कुर्आन मजीद अरब के लहनों में पढ़ो और यहूद व नसारा अहले इश्क के लहनों से बचो कि अन्करीब मेरे बअद कुछ ऐसे लोग आने वाले हैं जो कुर्आन आ, आ, कर के जैसे गानेकी तानें और राहियों और मरसिया ख़्बानों की उतार चढ़ाओ कुर्आन उन के गलों से नीचे न उतरेगा (यअनी उन के दिलों पर कुछ असर न करेगा) फितने होंगे उन के दिल और जिन्हें उन की यह हरकत (यअनी इस तरह की उतार चढ़ाव वाली किरात) पसन्द आयेगी उन के दिल भी (2) आज यह बात इस के हाफिजों कारियों में आम तौर से देखी जाती है। कि खुश इलहानी और उतार चढ़ाओ का बड़ा खयाल करते हैं अगर्चे साल के ग्यारह महीने नमाज के करीब तक न गये दाढ़ी मुन्डवाई, हराम का इरतिफाब किया और रमजान आते (याकी अगले सफा पर)



तिलावत में एक मजमूम तरीका यह भी है कि औरतों की आवाज़ बना कर तिलावत करे यह खुद नाजाइज़ है तशब्बोह की वजह से और गाने की तर्ज़ पर होने की वजह से। उलमा फ़रमाते हैं कि तफ़ख़ीम के साथ पढ़ना मतलूब है इस लिये हाकिम की हदीस में है :

**نزل القرآن بالتفخيم قال الحلّمي ومعناه أنه يقرأ على قراءة الرجال ولا يخضع الصوت فيه لكلام النساء.**

यअ़नी कुआन तफ़ख़ीम के साथ उतरा हलीमी ने फ़रमाया तफ़ख़ीम का मअ़ना यह है कि कुआन को मर्दों की तिलावत के तर्ज़ पर पढ़े और उस में औरतों की बोली की तरह आवाज़ परस्त न करे।

ही मुसल्ला पर खड़े कुआन सुनाने लगे हद तो यह है कि अ़वाम भी सही पढ़ने वाले कारियों को छोड़ कर गाने जैसी किरात और औरत जैसी आवाज़ वाले पढ़ने वालों को पसन्द करते हैं भले ही वह मख़ारिज की सहीह अदायेगी और तजवीद(किरात के फायदे)से ना बलद (अन्जान) हों (फ़ारुकी गुफ़िरलहू) (इतक़ान, जुज़ सानी स 107/108)



## जब औलाद दिल की घुठन हो जायें

इस से मुराद औलाद में <sup>(1)</sup>नाफरमानी की कसरत है माँ बाप की नाफरमानी अल्लाह जब्बार व कहहार की नाफरमानी है और उन की नाराज़गी अल्लाह कहहार की नाराज़गी है। आदमी माँ बाप को राज़ी कर ले तो वह उस के लिये जन्नत हैं और अगर नाराज़ कर दे तो वही उस के लिये बाइसे दोज़ख हैं।

जब तक माँ बाप को राज़ी न करेगा, उस का कोई फ़र्ज कोई नफ़ल, कोई अमले नेक असलन कबूल न होगा। अज़ाबे आख़िरत के अलावा दुनिया में ही जीते जी उस पर सख़्त बला नाज़िल होगी। मरते वक़्त मआज़ल्लाह कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है।

हज़रत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने :

**“طاعة الله طاعة الوالد ومعصية الله معصية الوالد”**

“अल्लाह की इताअत वालिद की इताअत है और अल्लाह की मअसियत

1. आज वालिदेन के साथ नाफरमानी का मुआमला भी आसानी से मुशहिदा किया जा सकता है जबकि वालिदेन की नाफरमानी तो दर किनार कुर्आन अजीम ने उन से ऊँची आवाज़ में बात करने बल्कि उफ़ या हूँ तक कहने की सख़्त मुमानअत फ़रमाई है चुनौचे इरशादे बारी तआला है :

**وَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٌ وَلَا تُنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا .**

यअनी “तू उन से हूँ न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से तअजीम की बात कहना” (पारा न. 15 / सूरए असरा / आयत न. 23 कनज़ुलईमान)

लेकिन आज मुआमला बिल्कुल उस के बर अक्स है हम ने ऐसे बेटों को भी देखा है जो बुढ़ापे में अपने वालिदेन की खिदमत व इताअत करने की बजाये उन्हें तरह तरह की अजियतें देते हैं बीमार माँ बाप दवा बग़ैरा तक के लिये मोहताज हैं। कोई पुरसाने हाल नहीं हत्ता कि अपनी बीबी की खुश्नूदी के लिये उन्हें मारपीट कर घरों से भी निकाल देते हैं जो उन की दुनिया व आख़िरत की बर्बादी का सबब है। चुनौचे खुद उसी हदीस में उसे कयामत की निशानियों में शुमार फ़रमाया कि मर्द अपनी बीबी की इताअत करे और माँ की नाफरमानी करे और बाप को दूर रखे (फारुकी गुफ़िरलहू)



वालिद की (नाफरमानी) मअसियत है (तलमसुब्बानाह जि. 4 स. 136)

नीज फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने:

”**كُلُّ الذَّنُوبِ يُؤَخَّرُ اللَّهُ مَا شَاءَ مِنْهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا عَقْرَ الْمَرْثُومِ فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَعْجَلُهُ لِصَاحِبِهِ فِي الْحَيَاةِ قَبْلَ الْمَمَاتِ.**“

यअनी ”सब ग़ुनाहों की सजा अल्लाह तआला चाहे तो क़यामत के लिये उठा रखता है मगर मर्ग मरणा की नाफरमानी की सजा उस के जीते जी (दुनिया ही में) पहुँचाता है“ (हाकिम मुस्तदरक जि. 4 स. 156)

नीज फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने :

”**مَلْعُونٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ، مَلْعُونٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ، مَلْعُونٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ.**“

यअनी ”मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये मलऊल है वह जो अपने वालिदैन को सताये मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये“ (तलमीज जि. 3 स. 287)

### JANNATI KAUN?

इमाम ऊल सुन्नत अअला हजरत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी बरेलवी कुद्दिस सिरूहुल अजीज़ फरमाते हैं :

वालिदैन के साथ नेकी सिर्फ़ यहीं नहीं कि उन के हुक्म की पाबन्दी की जाये और उन की मुखालफ़त न की जाये बल्कि उन के साथ नेकी यह भी है कि कोई ऐसा काम न करे जो उन को नापसन्द हो अगर्चे उस के लिये ख़ास तौर पर उन का कोई हुक्म न हो। इस लिये कि उन की फरमाँवरदारी और उन को खुश रखना दोनों वाजिब हैं। और नाफरमानी और नाराज़ करना हराम है“ (हक्क वालिदैन स. 38)

वालिदैन उस के लिये अल्लाह जल्ल शानुहू और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साये और उन की रबूबियत व रहमत के मजहर हैं यही वजह है कि कुर्आन अजीम में अल्लाह जल्ल जलालुहू ने अपने हक के साथ उन का हक भी जिक्र फरमाया:



हक मान मेरा और अपने माँ बाप का. **أَنْ أَشْكُرَ لِي وَالَّذِيكَ**

(पारा न. 21 / सूरए लुकमान, आयत 14 कन्जुलईमान)

हदीसे पाक में है कि : एक सहाबी-ए-रसूल ने हाजिरे खिदमत हो कर अर्ज की या रसूलल्लाह एक राह में ऐसे गर्म पत्थरों पर कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता कबाब होजाता मैं छः मील तक अपनी माँ को अपनी गर्दन पर सवार कर के ले गया हूँ क्या मैं अब उस के हक से ओहदा बरआ(क्या मैंने हक अदा कर दिया) हो गया ? इरशाद हुआ :

**لعله ان يكون بطلقة واحدة.** यअनी "तेरे पैदा होनेमें जिस कदर दर्द के झटके उस ने उठाये हैं शायद उन में से एक झटके का बदला हो सके. (मजमउज्जवाइद जि. 8 स. 137)

बिलजुमला वालिदैन का हक वह नहीं कि इनसान उस से ओहदा बरा हो(उनके हुक्क से छुटकारा पा सके) सके वह उस की हयात व वुजूद के सबब हैं तो जो कुछ नेअमतें दीनी व दुनियावी पायेगा सब उन्हीं के तुफैल में कि हर नेअमत व कमाल वुजूद पर मौकूफ है और वुजूद के सबब वह हुये तो सिर्फ माँ बाप होना ही ऐसे अजीम हक का मूजिब है जिस से कभी बरियुज्जिम्मा(छुटकारा पाना) नहीं हो सकता न कि उस के साथ उस की परवरिश में कोशिश उस के आराम के लिये उन की तकलीफें खुसूसन पेट में रखने, पैदा करने, दूध पिलाने, में माँ की अजियतें उन का शुक कहाँ तक अदा हो सकता है?



## जब उलमा अहले सरवत के लिये सीनों पर हाथ बाँधे झुकें

इस से मुराद उलमा के गिरोह में वह फुरसाक हैं जो माल व जाह के लालच में अहले सरवत के लिये झुकेंगे जिस का नतीजा यह होगा कि हलाल को हराम और हराम को हलाल ठहरायेंगे और दुनियादारों को उन की ख्वाहिश के मुवाफिक फूतवा देंगे जैसा कि आगे उसी हदीस में बयान हुआ उस से मकसूद<sup>(1)</sup> उलमा और अवाम दोनों की तहजीर व तम्बीह (डराना और नसीहत देना) है।

इमाम जलालुद्दीन सियूती हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक से

1. राहद व हिदायत की राह से भटकने वाले उलमा सू (बुरे उलमा) ही उमूमन सर माया दारों के पास जाते हैं और चन्द टकों की खातिर अपना फजल व वकार उन के पास गिरवी रख देते हैं। चुनौचे फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने

ان اناسا من امتي سيتفقون في الدين ويقرؤون القرآن  
ويقولون فاتي الا مرء فنصيب من ديننا ولا يكون  
ذلك كما لا يجتنى من القتاد الا الشرک كذلك لا يجتنى من قربهم .

यअनी "मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग होंगे जो दीन की समझ हासिल करेंगे और कुर्आन पढ़ेंगे फिर सरमाया दारों के पास जायेंगे और कहेंगे कि हम सरमाया दारों के पास जाते हैं और उन से दुनिया हासिल करते हैं और अपना दीन बचा कर अलग हो जाते हैं हालाँकि ऐसा हो ही नहीं सकता जिस तरह कताद (एक काँटे दार दरख्त) से काँटों के सिवा कुछ नहीं मिल सकता उसी तरह सरमाया दारों के करीब रहने से कुछ नहीं हासिल हो सकता" (सुनन इब्ने माजा स 23)

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।

لوان اهل العلم صانوا العلم ووضعوه عند اهل لساد وابه اهل زمانهم  
ولكنهم بذلوه لاهل الدنيا لينا لو ابه من دنياهم فها نوا عليهم .

यअनी "अगर उलमा अपना इल्म महफूज रखते और उसे जी सलाहियत इनसानों पर खर्च करते तो ज़माना के सरदार बन जाते मगर उन्होंने दुनिया के हुसूल के लिये अपना इल्म अहले दुनिया पर खर्च किया जिस की वजह से अहले ज़माना की तज़रों में जलील व ख़्बार हो गये। (मिशकात शरीफ स. 37) (बाकी अगले सफा पर)



अपनी किताब "अललालियुलमसनुआ" में हदीस रिवायत करते हैं जिस को उन्होंने अबू मुअिन से रिवायत किया। उन्होंने ने कहा मुझ से हदीस बयान की सुहैल इब्ने हरसान कलबी ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया बेशक वह चिकनी फिसलनी चट्टान जिस पर उलमा के पैर नहीं जमते "तमअ" है(लालच)। हदीस के अल्फाज यह हैं।

"عن ابی معن عن اسامة بن زید مرفوعاً ان الصفا الزلال لا هل العلم الطمع لأصع: محمد بن مسلمة ضعيف جدا وكذا خارجه (قلت) اخرجه ابن المبارك في الزهد عن ابی معن قال حدثني سهيل بن حسان الكلبي ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قال ان الصفا الزلال الذي لا يثبت عليه اقدام العلماء الطمع والله اعلم" (الآل المصنوعة، جلد اول ص ۲۱۰)

उसी में हजरत अनस से मरफूअन मरवी है कि उलमा अल्लाह के रसूलों के बन्दों के पास अमीन हैं जब तक बादशाह से न मिलें और दुनिया में दखल न दें तो जब दुनिया में दखल देने लगें और बादशाहों से मिल जायें तो बेशक उन्होंने ने रसूलों के साथ खयानत की तो उन से दूर रहो। हदीस के अल्फाज यह हैं।

आज यह मन्जर भी हमारी निगाहों के सामने है कि उलमा ने आखिरत से बे फिकर हो कर इस फ़ानी दुनिया का हुसूल ही अपने इल्म का मकसद बना रखा है और सियासी लीडर बनने और शोहरत व दौलत हासिल करने में सर गरदों हैं बअज नाआकेबत अन्देश नाम निहाद उलमा अखबारात में छपना अपनी मेअराज तसव्वुर करते हैं और तरह तरह के लायअनी और गुमराह कुन बयानात दे कर कौम और जिम्मादाराने कौम को बदनाम करते हैं (फारूकी गुफिरलहु) सियासी लीडर बनने की



”عن انس مرفوعا العلماء امناء الرسل على العباد ما لم يخالطوا  
لسلطان و يدخلوا في الدنيا فاذا دخلوا في الدنيا و خالطوا السلطان فقد  
خانوا الرسول فاعتزلوهم“

(الآل المصنوعة، جلد اول ص ۲۱۹)

मगर सारे उलमा का यह हाल न होगा "बुखारी शरीफ" की हदीस में वारिद हुआ जो हजरत अमीर मुआविया से मरवी है कि सर कार अलैहिस्सलाम ने फरमाया अल्लाह जिस से भलाई का इरादा फरमाता है उस को फकीह (दीन की समझ रखने वाला) बनाता है और मैं तो बाँटने वाला हूँ अल्लाह देता है! मेरी उम्मत का एक गिरोह अल्लाह का हुक्म आने तक अल्लाह के दीन पर काइम रहेगा उन के मुखालिफ उन्हें कुछ न नुकसान पहुँचा सकेंगे।

हदीस पाक के अल्फाज़ यह हैं।

”عن ابن شهاب قال قال حميد بن عبد الرحمن سمعت معاوية خطيبا يقول سمعت النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يقول من يرد الله به خيرا يفقهه في الدين و انما انا قاسم والله يعطى ولن تزال هذه الامة قائمة على امر الله لا يضرهم من خالفهم حتى يأتي امر الله“ (بخاری شریف جلد ۱، ص ۶۱)

इस हदीस से जाहिर होता है कि क़यामत तक ख़यारे उलमा (अच्छे उलमा) जो शरीअत के पासबान और दीन के फकीह हैं होते रहेंगे वह खुद दीन पर काइम रहेंगे और उन की बरकत से उन के सच्चे मुत्ताबईन कि अहले सुन्नत व जमाअत हैं दीन पर काइम रहेंगे।

इस पर खुद इसी हदीस में क़रीना मौजूद कि फरमाया कुरा ब—कसरत होंगे और फुवहा कम रह जायेंगे जिस से साफ़ जाहिर है कि ऐसे लोग क़यामत आने तक आते रहेंगे और यह जो फरमाया कि कारी ब—कसरत होंगे फिकरा—ए—साबिका (पिछले जुमले) से मिलाने पर यह समझ में आता है कि कारियों की कसरत से ऐसे लोग मुराद हैं जो कुर्आन तो पढ़ेंगे लेकिन उस के मअ्ना में फहम व तदब्बुर (सूझ



बूझ) से काम न लेंगे और उस तरह सहाबा किराम का वह तरीका जो हुजूर अलैहिस्सलाम से उन्होंने लिया और उन के मुत्तबेईन में (अनुयाईयों) राइज हुआ मतरूक हो जायेगा।

हजरत अबू अब्दुरहमान सुलमी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है उन्होंने फरमाया हम से हदीस बयान की उन सहाबी ने जो हम को कुर्आन पढ़ाते थे कि वह लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दस आयतें सीखते थे तो दूसरी दस आयतों की किरात न शुरू करते जब तक कि जो उन में इल्म व अमल है जान नहीं लेते। उन्होंने ने फरमाया तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हम को इल्म व अमल दोनों की तअलीम देते थे।

इस हदीसे पाक से साबित हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को काइनात के तमाम बाकिआत की खबर है, माजी व मुस्तकबिल (भूतकाल व भविष्यकाल) सब का इल्म है आलम का जर्रा जर्रा पेशे नज़र है कर्बे कयामत की निशानियाँ और खुद कयामत सब मुशाहिदा में हैं।

उलमा फरमाते हैं कि सर कार अलैहिस्सलाम दुनिया से तशरीफ़ न ले गये मगर इस हाल में कि अल्लाह ने हुजूर को उस से मुत्तलअ फरमादिया कि कयामत कब आयेगी उस की तअईन (वक्त खास करना) लोगों से पोशीदा रखने का सर कार अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया बल्कि बअज़ अहादीस से कयामत के अहवाल का भी पेशे नज़र होना साबित है।

उलमा-ए-किराम की इस राय की ताईद एक दूसरी हदीस से मुस्तफ़ाद (हासिल) होती है यह हदीस हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है जो " कन्जुलउम्मा" जि. 14 स. 583 / पर मौजूद और ख़ासी (काफी) तवील है।

इस में हजरत ईसा अला नबियिना अलैहिस्सलाम



के दफन के थोड़े अरसा बाद एक हवा का जिक्र है जो यमन की तरफ से चलेगी रूये ज़मीन पर जितने मुसलमान उस वक़्त होंगे यह हवा उन की रूह कब्ज़ कर लेगी और कुआन को एक ही रात में उठालिया जायेगा तो इन्सानों के सीनों में और उन के घरों उस में से कुछ न रहेगा तो ऐसे लोग रह जायेंगे जिन में न कोई नबी होगा न कुआन का इल्म होगा और न उन में कोई मुसलमान होगा।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र व इब्ने आस ने फरमाया तो यहाँ पर हम से कियामत के बरपा होने का वक़्त छुपालिया गया तो हम नहीं जानते कि उन लोगों को कितनी मुहलत दी जायेगी।

हदीसे पाक के अल्फाज़ यह हैं :

”عن عبد الله بن عمرو أن رجلاً قال له أنت الذي تزعم أن الساعة تقوم الى مائة سنة قال سبحان الله و أنا اقول ذلك ومن يعلم قيام الساعة الا الله انما قلت ما كانت رأس المائة للخلق منذ خلقت الدنيا الا كان عند رأس المائة أمر. قال ثم يوشك أن يخرج ابن حمل الضأن، قيل وما ابن حمل الضأن؟ قال رومي أحد ابويه شيطان، يسير الى المسلمين في خمس مائة ألف بحراً حتى ينزل بين عكا وصور ثم يقول يا أهل السفن اخرجوا منها، ثم أمر بها فأحرقت، ثم يقول لهم لا قسطنطينية لكم ولا رومية حتى يفصل بيننا وبين العرب، قال فيستمد أهل الاسلام بعضهم بعضاً حتى تمدهم عدن أيبن على قلاصاتهم فيجتمعون فيقتتلون فتكاتبهم النصارى الذين بالشام ويخبرونهم بعورات المسلمين فيقول المسلمون الحقوا فكلكم لند عدو حتى يقضى الله بيننا وبينكم، فيقتتلون شهراً لا يكل لهم سلاح ولا لكم ويقذف الطير عليكم وعليهم قال و



بلغنا انه اذا كان رأس الشهر قال ربكم اليوم أسل  
 سيفي فانتقم من أعدائي و أنصر أوليائي ، فيقتلون  
 مقتلة مارثي مثلها قط حتى مات سير الخيل الا على  
 الخيل وما يسير الرجل الا على الرجل ، وما يجدون  
 خلقا يحول بينهم وبين القسطنطينية و لا رومية ، فيقول  
 أميرهم يومئذ لا غلول اليوم ، من أخذ اليوم شيئا فهو  
 له ، قال فيأخذون ما يخف عليهم و يدعون ما ثقل عليهم  
 فيينما هم كذلك اذ جاءهم ان الدجال قد خلفكم  
 في ذرار بكم ، فيرفضون ما في أيديهم و يقبلون ، و  
 يصيب الناس مجاعة شديدة حتى أن الرجل ليحرق و  
 ترقوسه فيأكله ، و حتى أن الرجل ليحرق حافته  
 فيأكلها ، و حتى أن الرجل ليكم أخاه فما يسمعه الصوت  
 من الجهد ، فيينما هم كذلك اذ سمعوا صوتا من السماء  
 أبشروا فقد أتاكم الغوث فيقولون : نزل عيسى ابن مريم  
 فيستبشرون و يستبشربهم صل يا روح الله فيقول ان الله  
 اكرم هذه الأمة فلا ينبغي لأحد أن يؤمهم الا منهم ،  
 فيصلي و أمير المؤمنين بالناس قيل و أمير الناس يومئذ  
 معاوية بن ابي سفيان قال لا يصلّي عيسى خلفه فاذا  
 نصرف عيسى دعا بحربته فأتى الدجال فقال رويدك يا  
 دجال يا كذاب فاذا رأى عيسى و عرف صوته ذاب كما  
 يذوب الرصاص اذا اصابته النار و كما تذوب الالية اذا  
 اصابتها الشمس ولو لا انه يقول رويد الذاب حتى لا  
 يبقى منه شيء ، فيحمل عليه عيسى فيطعن بحربته بين  
 ثدييه فيقتله و يفرق جنده تحت الحجارة و الشجرة و  
 عامة جنده اليهود و المنافقون فينادي الحجر يا روح  
 الله هذا تحتى كافر فاقتله فيأمر عيسى بالصليب فيكسر



و بالخنزير فيقتل و تضع الحرب اوزارها حتى ان  
الذئب ليربض الى جنبه ما يغمز بها ، و حتى ان الصبيان  
يلعبون بالحيات ماتنهشهم ، و يملأ الأرض عدلا  
فيينماهم كذالك اذ سمعوا صوتا قال فتحت يا جوج و  
ما جوج و هو كما الله تعالى (وهم من كل حذب  
ينسلون) فيفسدون الارض كلها حتى ان اوائلهم ليأتي  
انهر العجاج فيشربونه كله و ان آخرهم ليقول قد كان  
ههنا نهر و يحاصرون عيسى و من معه بيت المقدس و  
يقولون ما نعلم في الارض احد الا ذبحناه هلموا نرمى  
من في السماء فيرمون حتى ترجع اليهم سهامهم في  
نصولها الدم للبلاء فيقولون ما بقى في الارض و لا في  
السماء فيقول المؤمنون يا روح الله ادع عليهم بالفناء  
فيدعو الله عليهم فيبعث النصف في آذانهم فيقتلهم في  
ليلة واحدة فتنتن الارض كلها من جيفهم فيقولون يا  
روح الله نموت من التنن فيدعو الله ، فيبعث و ابلا من  
المطر فجعله سيلا فيقذفهم كلهم في البحر ثم يسمعون  
صوتا فيقال له ؟ قيل غزى البيت  
الحصين فيبعثون جيشا فيجدون اوائل ذلك الجيش و  
يقبض عيسى ابن مريم و وليه المسلمون و غسلوه و  
حنطوه و كفنوه و صلوا عليه و حفر و اله و دفنوه ، فير  
جع اوائل الجيش و المسلمون ينفضون ايديهم من  
تراب قبره ، فلا يلبثون بعد ذلك الا يسيرا حتى يبعث  
الله الريح اليمانية ، قيل و ما الريح اليمانية ؟ قال ريح  
من قبل اليمن ليس على الارض مؤمن يجد نسيمها الا  
قبضت روحه قال ويسرى على القرآن في ليلة واحدة  
ولا يترك في صدور بني آدم و لا في بيوتهم منه شيء الا



رفعه الله فيبقى الناس ليس فيهم نبي وليس فيهم قرآن  
وليس فيهم مؤمن قال عبد الله بن عمر وفعد ذلك  
أخفى علينا قيام الساعة فلا ندري كم يتركون كذلك  
تكون الساعة، قال ولم يكن صبيحة قط الا بغضب من  
الله على اهل الارض قال وقال الله تعالى (وما ينظر  
هؤلاء الا صيحة واحدة ماله من فواق) سورة ص آية  
١٥، قال فلا أدري كم يتركون كذلك. (كنز العمال جلد ١٢ ص ٥٤٠)

इस हदीस से ज़ाहिर है कि सहाबा किराम अपने बारे में यह  
ख़बर दे रहे हैं कि उन से क़यामत का वक़्त छुपा लिया गया और  
छुपाने वाले हुज़ूर अलैहिस्सलाम हैं तो यह छुपाना इस अम्र  
(बात)की दलील है कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम  
को क़यामत के बरपा होने के वक़्त की ख़बर थी मगर बताने का हुक्म  
न था इस लिये सहाबा किराम से छुपाया।

“बुख़ारी शरीफ़” क़िताबुलहुज़ू में हुज़ूर असमा बिनते अबूबक़ से  
हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई ऐसी चीज़  
नहीं जो मैंने अब से पहले न देखी थी मगर यह कि उन को ऐसे  
मक़ाम पर देखा यहाँ तक कि जन्नत,दोज़ख़ का मुशाहिदा  
फ़रमालिया और बे शक़ मेरी तरफ़ वही आती है कि तुम अपनी क़ब्रों में  
आज़माये जाओगे दज्जाल के फ़ितना या उस के करीब तुम में से हर  
एक के पास फ़रिश्ते आयेंगे तो पूछा जायेगा उस शख्स के बारे  
में(यअनी हुज़ूर के बारे में)तुम्हारा क्या इल्म है ? तो मोमिन या  
मोकिन(शक़े रावी)कहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि  
वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं हमारे पास रौशन निशानियाँ और  
हिदायत ले कर आये तो हम ने उन का कहा माना और ईमान लाये  
और उन की पैरवी की तो उस से कहा जायेगा सोजा भला चंगा उस  
से कहा जायेगा कि हमें मअ्लूम था बेशक़ तू मोमिन है। और मुनाफ़िक़



या मुरताब(शके रावी)कहेगा मैं नहीं जानता मैंने लोगों को कुछ कहते सुना तो मैं ने वही कहा।

हदीस पाक के अल्फाज यह हैं :

”عن جدتها أسماء بنت أبي بكر أنها قالت أتيت عائشة زوج النبي صلى الله تعالى عليه وسلم حين خسفت الشمس فإذا الناس قيام يصلون فإذا هي قائمة تصلي فقلت ما للناس فأشارت بيدها نحو السماء وقالت سبحان الله فقلت أية فأشارت أن نعم فقممت حتى تجلاني الغشي و جعلت أصب فوق رأسي ماء فلما انصرف رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم حمد الله و اثنتي عليه ثما قال ما من شيء كنت لم أره الا قدر أية في مقامي هذا حتى الجنة و النار و لقد و حي الى انكم تفتنون في القبور مثل او قريبا من فتنة الدجال لا ادرى اى ذلك قالت أسماء يؤتى احدكم فيقال له ما علمك بهذا الرجل فاما المؤمن او الموقن لا ادرى اى ذلك قالت أسماء فيقول هو محمد رسول الله جاءنا بالبينات و الهدى فاجبنا و امننا و اتبعنا فيقال نعم صالحا فقد علمنا ان كنت لمؤمننا و اما المنافق او المرتاب لا ادرى اى ذلك قالت أسماء فيقول لا ادرى سمعت الناس يقولون شيئا فقلته“ (بخاری شریف جلد اول ص ۳۰/۳۱)



## जब मस्जिदें आरास्ता की जायें

यहाँ यह बात काबिले जिक्र है कि कुर्ब कयामत की निशानियों में जो बातें शुमार की गई वह सब ना जाइज व हराम नहीं। उन में कुछ वह भी हैं जो जाइज व मुबाह हैं मसलन मुसहफ़ शरीफ को सोने चाँदी से मुज़य्यन करना और मस्जिद को नक़्श व निगार से आरास्ता करना अग्रे मुबाह है<sup>(1)</sup>। ("दुरै मुक्तार" जिल्द 6 स 388) में है

و جاز تحلية المصحف (ای بالذهب و الفضة) لما فيه من تعظيمه كما في نقش المسجد .

यअनी "मुसहफ़ को उस की तअज़ीम की खातिर सोने और चाँदी से मुज़य्यन करना जाइज है जैसे मस्जिद को आरास्ता करना"

और मस्जिद के नक़्श व निगार के जवाज़ पर खुद हदीस इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा शाहिद(गवाह) है कि फरमाया **لَتَزْخَرَفْنَهَا** तुम ज़रूर मस्जिदों को मुनक्क़श करोगे और हुज़ूर अलैहि सलाम से इस अम्र की मुमानअत नक़ल न फरमाई।

1. लेकिन अफ़सोस कि आज हमारी मस्जिदें दिल को मुनतशिर कर देने वाले रंग बिरंग टाइल्स दीदा जेब झालर व फ़ानूस हफ़्त रंगे कुमकुमों दिल फ़रेब मर मरी फ़र्श बेश बहल नक़्श व निगार वाले पर्दों ऊँचे ऊँचे भीनारों और दीगर दुनियवी जेब व जीनत और आराम व राहत की चीज़ों से तो आबाद हैं मगर नमाज़ियों से यक़सर खाली हैं। सच कहा है किसी कहने वाले ने

मस्जिद तो बनाली शब भर में ईमों की हसरत वालों ने

मन अपना पुराना पापी था दरसों में नमाज़ी बन न सका

और जो नमाज़ी हैं वह दुनिया की सारी बातें ले कर मस्जिद ही में बैठ जाते हैं हालाँकि फ़ुक्हा-ए-किराम ने मस्जिद में दुनिया की जाइज बातें भी करना ममनूअ़ करार दी हैं।

और कयामत की निशानियों में से यह भी कि लोग मस्जिदों में दुनिया की बातें करेंगे चुनौचे कनज़ुलउम्माल जि 14 में है :



खुद हजरत असमान इब्ने अफफान रदियल्लाहु तआला अन्हु का अमल इस के जवाज पर शाहिदे अदल(गवाह) है। बुखारी शरीफ में हैं कि मस्जिद हुजूर अलैहिस्सलातु वरसलाम के जमाने में कच्ची ईंट की बनी थी और इस की छत खजूर के पत्तों की थी और सुतून खजूर की लकड़ी के थे। फिर हजरत अबूबक रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस में कुछ ज्यादा न किया और हजरत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस में तौसीअ(बढ़ाना)फरमाई और इस को इसी तौर पर बनाया ईंट और खजूर के पत्तों से जैसी हुजूर अलैहिस्सलातु वरसलाम के जमाने में थी और उसके सुतून लकड़ी के उसी तौर पर रखे।

फिर हजरत असमान रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस की बहुत तौसीअ तौसीअ(चौड़ीकरण)और फुस की दीवार को मुनक्कश पत्थर और चूने से बनाया और उस के सुतून नक्शी(नक्श वाले)पत्थर के बनाये और बेश कीमत लकड़ी की छत बनाई।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ لَا تَقُومُوا السَّاعَةَ حَتَّى يَتَبَاهَى النَّاسُ فِي الْمَسَاجِدِ .

यअनी "कयामत उस वक्त तक न आयेगी जब तक लोग मस्जिदों में फखरिया बातें न करने लगे।"

बैहकी ने "शोअबुलईमान" में इमाम हसन बसरी से रिवायत की कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लोगों पर एक ऐसा जमाना आयेगा कि मस्जिदों में दुनियावी बातें हुआ करेंगी तुम उन के पास न बैठना कि अल्लाह को उन की कोई परवाह नहीं।(बहारे शरीअत जि.1 हिस्सा 3 स. 181) नीज फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कि :

اِذَا زَخَرَفْتُمْ مَسَاجِدَكُمْ وَحَلَيْتُمْ مَصَاحِفَكُمْ فَالْدَّمَارُ عَلَيْكُمْ.

यअनी जब तुम अपनी मस्जिदों को सजाने लगे और कुरआन को दीदा जेब बनाने लगे तो समझ लो कि तुम्हारी हलाकत का वक्त करीब है(कन्जुलउम्मा ल जि. 14 स. 210 (फारुकी गुफिरलहु)



हदीसे पाक के अल्फाज़ यह हैं।

عن عبد الله بن عمر اخبره ان المسجد كان على عهد رسول الله تعالى عليه وسلم مبنيًا باللبن وسقفه الجريد وعمده خشب النخل فلم يزد فيه ابوبكر شيئًا وزاد فيه عمر وبناه على بنيانه في عهد رسول الله تعالى عليه وسلم باللبن والجريد واعاد عمده خشبًا ثم غيره عثمان فزاد فيه زيادة كثيرة وبني جداره بالحجارة المنقوشة والقصة وجعل عمده من حجار منقوشة وسقفه بالساج. (بخاری شریف جلد اول ص ۶۴)

यहाँ से मअलूम हुआ कि हर नई बात जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम के जमाने में न थी नाजाइज़ नहीं बल्कि यह (बिदअत्त) कभी वाजिब होती है जैसे गुमराहों के रद्द के लिये दलाइल काइम करना और किताब व सुन्नत को समझने के लिये नहव व सर्फ (अरबी सीखने के काइदे) वगैरा मबादी को सीखना और कभी मुस्तहब होती है जैसे सराये और मदरसे बनाना और हर वह नेकी जो सदरे अब्बल में न थी और कभी मकरू होती है जैसे एक कौम पर मरिजद का नक्श व निगार और कभी मुबाह होती है जैसे लज़ीज़ खाने कपड़े और तोसिक वगैरा कमा फी (रद्दुल मुहतार)

और जाबता यह है कि जिस चीज़ से अल्लाह व रसूल जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम ने सख़्ती के साथ मनअ् फ़रमाया वह ममनूअ् व नाजाइज़ है और जिस से मनअ् न फ़रमाया वह ममनूअ् नहीं बल्कि मुबाह है और “الاصل في الاشياء اباحة” अश्या में असल इबाहत है।



## जब महीने घट जायें

“मजमअ बिहारुलअन्वार” में है : अहले हयअत ने कहा कि दाइरातुलबुरुज दाइरा मअदलुन्नहार पर मुस्तकबिल में मुन्तबिक हो जायेगा। तौजीह इस मकाम की यह है कि कुतबे शुमाली और कुतबे जुनूबी के दरमियान एक दाइरा अजीमा माना गया है जिस का फरसल दोनों कुतबों से बराबर है यअनी वह दाइरा अजीमा कुतबे शुमाली से 90 दर्जा पर है और कुतबे जुनूबी से भी 90 दर्जा पर है उसी दाइरा—ए—अजीमा का नाम दाइरा—ए—मअदलुन्नहार है।

12 मार्च और 24 सितम्बर को आफ़ताब दाइरा—ए—मअदि—लुन्नहार पर हरकत करता है 22 जून को आफ़ताब जिस नुक्ते से तुलूअ करता है उस नुक्ते से 23 दर्जा 27 दकीका जुनूब में मअदिलुन्नहार है

यूहीं 22 जून को जिस नुक्ते पर आफ़ताब गुरुब करता है उस नुक्ते से भी 23 दर्जा 27 दकीका जुनूब में मअदिलुन्नहार है और 22 दिसम्बर को आफ़ताब जिस नुक्ते से तुलूअ करता है उस नुक्ते से 23 दर्जा 27 दकीका शिमाल में मअदिलुन्नहार है।

यूही 22 दिसम्बर को जिस नुक्ता पर आफ़ताब गुरुब करता है उस नुक्ता से भी 23 दरजा 27 दकीका शुमाल में मअदलुन्नहार है यअनी 22जून और 22 दिसम्बर के मतलअ के ऐन वस्त में मअदलुन्नहार है।

यूही 22 जून और 22 दिसम्बर के मतलअ के जाये गुरुब(गुरुब की जगह) के बीच व बीच मअदलुन्नहार है।

इस को मअदलुन्नहार इस लिये कहा जाता है कि सूरज जब इस दाइरा के सीध में आता है तो तमाम मकामात में दिन रात तकरीबन बराबर होते हैं जो दाइरा—ए—मअदलुन्नहार को इस तरह कतअ करता है कि दोनों के कुतबों में 23 दरजा 27 दकीका फरसल रहता है उसी दाइरा—ए—अजीमा को दाइरातुलबुरुज या मन्तिकतुलबुरुज कहते हैं। इस दाइरा से सितारों की हरकात की मिकदारे तूल और मील शम्स मअलूम होता है।



यहाँ से मअ्लूम हुआ कि जब तक यह दाइरा-ए-अजीमा, दाइरा-ए-मअ्दुलुन्नहार को इस तौर पर काटता हुआ चलेगा कि मुनदरजा वाला फासला दोनों में काइम रहे और जब तक हरकते शम्स मअ्मूल के मुताबिक रहे।

“وَإِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ” में इमाम राजी अलैहिर्रहमा न की तफ्सीर में एक कौल यह नक़ल किया :

“**الْقَيْتُ وَرَمِيتُ عَنِ الْفَلَكَ**” यअनी जब सूरज फलक से नीचे डाल दिया जाये। (तफ्सीर कबीर जि. 31 स. 66)

इस से इस कौल की ताईद और हदीस की तरदीक मुस्तफ़ाद होती है और इस सूरत में खुद आयते करीमा से मजमूने हदीस की तरदीक साबित है और हदीस का मजमून मफ़हूमे आयत का बयान है कि सूरज जब अपने मदार से नीचे जो ज़मीन से करोड़ों मील ऊपर है अपने मदार से नीचे फेंका जायेगा तो ला मुहाला उस का दाइरा छोटा होता जायेगा और नीचे आने के सबब उस की हरकत तेज़ हो जायेगी तो मुसाफ़त भी कम और हरकते शम्से भी तेज़ होगी।

लिहाज़ा बदाहतन ज़माने की मिक़दार घट जायेगी हज़रत अबूहुरैरा से हदीस मरबी है कि जब क़यामत करीब होगी ज़माना करीब होजायेगा (थोड़ा रह जायेगा) तो साल महीना की तरह और महीना जुमआ की तरह और जुमआ की मुदत इतनी होगी जितनी देर में खजूर की टहनी आग में जल जाये।

हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ إِذَا اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ تَقَارَبَ الزَّمَانُ فَتَكُونُ السَّنَةُ كَالشَّهْرِ وَالشَّهْرُ كَالْجُمُعَةِ وَالْجُمُعَةُ كَالْحَتَرِاقِ السَّعْفَةِ فِي النَّارِ (کنز جلد ۱۴ ص ۲۲۷)

साल और महीना वगैरा की मिक़दार काइम रहेगी और यह फासिला जितना कम होता जायेगा उस के नतीजा में दाइरातुलबुरुज मअ्दुलुन्नहार से बतदरीज नज़दीक होता जायेगा और ज़माना की मिक़दार घटती जायेगी।

यहाँ से जाहिर हुआ कि यह जो फ़रमाया गया कि महीने घट



जायेंगे अपने जाहिरी मअना पर है और कोई वजह हकीकी मअना से मानेअ(रोकती)नहीं तो वही हकीकतन मुराद है और हदीस जो आखिर में जिक की गई वह फिकरा-ए-हदीस से फिकरा-ए-मजकूरा की तफसीर है **وَاللّٰهُ الْحَمْدُ**.

विलजुमला मजमून हदीस अपने जाहिर पर है और जाहिरी मअना मुराद लेने में न कोई इस्तिहाला(मजबूरी) है न कोई और दलीले शरई ऐसी है जो जाहिरी मअना से उदूल की मुक्तजी है (न कोई दलीले शरई ऐसी है जो जाहिरी मअना मानने से रोकती हो) है बल्कि 'बुखारी शरीफ' में उस मजमून को मुअय्यद हदीस मौजूद है जिस में "तकारिबुज्जमान" फरमाया गया जिस से जमाने का बाहम करीब होना जाहिरन मुस्तफाद(साबित) है " मुस्लिम शरीफ" की हदीस में है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दज्जाल का जिक फरमाया सहाबा ने अर्ज किया जमीन में दज्जाल की मुद्त इकामत (ठहरने की मुद्त)कितनी होगी?फरमाया चालीस दिन। एक दिन एक साल जैसा होगा और एक दिन एक महीना जैसा होगा और एक दिन जुमआ जैसा यानी एक हफ्ता के बराबर होगा और दज्जाल के बाकी अय्याम तुम्हारे दिनों जैसे होंगे तो अर्ज की गई या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो वह दिन जो एक साल बराबर होगा तो क्या हमें उस में एक दिन की नमाज पढ़ना काफी होगा कहा नहीं उस के लिय अन्दाजा रखो।

अल्लामा शलबी, इमाम कमालुद्दीन हुम्माम से हाशिया तबीयीनुलहकाइक से नाकिल उन्होंने ने इस हदीस को नकल करने के बअद फरमाया बे शक सरकार अलैहिस्सलाम ने उन हदीस में अपने इरशाद में अस्र की तीन सौ नमाजें वाजिब फरमाई इस से पहले कि साया एक मिस्ल या दो मिस्ल हो और उसी पर बाकी नमाजों को कयास करो। (तबीयीनुलहकाइक जि.1 स 81)

यहाँ से जाहिर हुआ तकारिबे जमान और नुक्साने मिकदारे साल व अय्याम अपने जाहिर पर है जिस में किसी तावील की गुन्जाइश नहीं बल्कि हदीसे मुस्लिम साफ साफ दाफेअ तावील है यहाँ



से यह भी जाहिर हुआ कि सूरज का गीले शम्स जो मजकूर हुआ उस का उसी मिकदार मोअताद पर काइम रहना जरूरी नहीं बल्कि उस में बतदरीज कमी होती रहेगी तेजी से मौसम की तबदीली जिस का मुशाहिदा है उस की रौशनी दलील है नीज कुआन शरीफ में फरमाया :

”والشمس تجري لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم“

यअनी "और सूरज चलता है अपने ठहराओ के लिये यह हुक्म है जबर दस्त इल्म वाले का" (तर्जमा कन्जुल ईमान)

आयते करीमा से जाहिर कि सूरज मुसल्लसल अपने मुस्तकर की तरफ चल रहा है और जब सूरज अपने मुस्तकर की तरफ रवाँ दवाँ है तो जरूर उस की उस के लिये एक मसाफत मुकद्दर है जिसे उस को कयामत तक तै करना है लिहाजा किसी एक मुस्तकर पर नहीं ठहरता बल्कि जब किसी मुस्तकर पर पहुँचता है बहुक्ने इलाही वहाँ से दूसरे मुस्तकर की तरफ रवाँ हो जाता है यही सिलसिला उस की इन्तिहा—ए— सैर तक यअनी कयामत तक जारी रहेगा।

तफसीरे कबीर में है : **JANNATI KAUN?**

وَعَلَىٰ هَذَا فَمَعْنَاهُ تَجْرِي الشَّمْسُ وَقَدْ اسْتَقَرَّ رَها اى  
كلما استقرت زمانا امرت بالجري فجرت ويحميل ان  
تكون بمعنى الى اى الى مستقر لها ويؤيد هذا قراءة من  
قرأ (والشمس تجري الى مستقر لها) وعلى هذا ففى  
ذلك المستقر وجوه (الاول) يوم القيامة وعنده تستقرو  
لا يبقى لها حركة.

यअनी "और उस तकदीर पर जब कि लाम इफादा वक्त के लिये हो तो आयत का मअना यह है कि सूरज अपने जमान—ए—इस्तिकरार में चलता है यअनी जब किसी जमाना में किसी मुस्तकर पर पहुँचता है उस को वहाँ से चलने का हुक्म होता है तो चल पड़ता है और यह इहतिमाल है कि लाम बमअना इला हुवा यअनी सूरज अपने मुस्तकर की तरफ चल रहा है और उस तौजीह की मुअय्यद उस की किरात है



”وَالشَّمْسُ تَجْرِي إِلَىٰ مَسْقَرِهَا“ जिस ने यूँ पढ़ा और उस तौजीह पर उस मुस्तकर मजकूर में चन्द तौजीहात हैं पहली यह कि वह मुस्तकर यौमे कयामत है और उस दिन सूरज ठहर जायेगा और उस में हरकत न रहेगी। (71 / 26)

उसी में है :

”قوله (ذلك) يحتمل ان يكون اشارة الى جري الشمس أى ذلك الجري تقدير الله (الى ان قال) ان الشمس فى ستة اشهر كل يوم تمر على مسامطة شئ لم تمر من امسها على تلك المسامطة

यअनी”और अल्लाह का फ़रमान ”ज़ालिका”में इहतिमाल है कि उस में इशारा हो सूरज के चलने की तरफ़ यअनी सूरज का यह चलना अल्लाह की तक्दीर है यहाँ तक कि उन्होंने कहा कि सूरज छः महीनों में हर दिन किसी शय की सिम्त से गुज़रता है कि गुज़रता कल उस सिम्त से न गुज़रा था। (72 / 26)

इस से ज़ाहिर कि सूरज मुसलसल चल रहा है और एक मुसाफ़त तै कर रहा है और उसे किसी मुस्तकर पर करार नहीं। अअला हज़रत ने अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की एक किरात नक़ल की कि उन्होंने ने यूँ पढ़ा ”لَا مَسْقَرُهَا“ यह तफ़ावुते मील और बतदरीज इरतिफ़ाअ व इन्ख़िफ़ाज और बोअद व कुर्ब में तफ़ावुत का मुक़तज़ी है और आख़िर कार कयामत के नज़दीक सूरज के ज़मीन से ज़्यादा करीब होन पर दलालत करता है जो तकारिबे ज़मान और यौम व साल में नुक़सान का मुक़तज़ी है जिस का इफ़ादा अहादीस ने फ़रमाया(कयामत के नज़दीक सूरज के ज़मीन से ज़्यादा करीब होने की वजह से ज़माना करीब हो जायेगा और दिनों व साल कम हो जायेंगे यअनी छोटे हो जायेंगे) وَفِي الْآيَةِ وَجْوهُ اخرو القرآن محتج به على جميع وجوهه كما افاده الامام سيدى امجد مولانا الشيخ احمد رضا قدس سره نقلا عن الزرقانى على المواهب.



## जब औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें

यअनी फख्र व मुबाहात के तौर पर मर्दों से मुशाबहत इख्तियार करें। चुनौचे मुत्तसिलन फरमाया गया :

“ और औरतें मर्दों से मुशाबहत इख्तियार करें ”

तो यह करीना-ए-साबिका है मजीद बरआँ उस में इफादा-ए-उमूम है यअनी खास शह सवारी ही नहीं बल्कि और भी मरदाना अतवार अपनायेंगी और मुस्तहक़े जन्ब(गुनाह की मुस्तहक़) होगी<sup>(1)</sup> बिला जरूरते सहीहा औरत को घोड़े पर चढ़ना मनअ है कि यह भी एक क़िस्म का मरदाना काम है हदीस में उस पर लअनत आई इब्ने हब्बान अपनी सहीह में अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

”يكون في آخر امتي نساء يركبون على مرج كاشباه الرجال (الحديث) وفي آخره العنوهن فانهن ملعونات.

यअनी “मेरी उम्मत के आखिर में कुछ ऐसी औरतें होंगी जो

1.आज हम देख रहे हैं कि लड़कियाँ भी वे डिझक मर्दों की तरह बाल रखती हैं जिन्स पैन्ट और टी शर्ट जैसे तंग व चुस्त कपड़े पहन रही हैं जिस से उन के बदन के सारे नशीब व फराज वाजेह हो जाते हैं यअनी कपड़ा पहनने के बावजूद भी वह नंगी ही होती हैं और यह दअवते गुनाह देने के मुतरादिफ है।

चुनौचे हदीस पाक में है : عن ابن عمر قال لا تقوم الساعة حتى يأتى يأنى هجرته अब्दुल्ला इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि कयामत उस वक्त तक न काइम होगी जब तक कि लोग जानवरों की तरह रास्तों में जुपती न करने लगें।

(कन्जुल उम्माल जि.14 स. 246)

आज जायजा सड़कों और मेलों में एअलनिया जना कारी की वारदातें होने लगी हैं जिन की खबरें हम आये दिन अखबारात में मुलाहिजा करते हैं। जाहिर है कि जब इस कद्र बे हयाई व उरयानियत बढ़जायेगी तो अन्जाम यही होगा। (फारुकी गुफिरलहु)



मर्दों की तरह जानवरों पर सवार होंगी (अलहदीस) और उस के आखिर में यह अल्फाज आये : उन औरतों पर लअूनत भेजो क्योंकि वह मलऊन हैं। (मोरिदुज्जमान स. 351)

सुनन अबी दाऊद में इब्ने अबी मलीका से मरबी है:

**”قيل لعائشة ان امرأة تلبس النعل فقالت لعن رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم الرجل من النساء.**

यअनी “उम्मुलमोमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा से कहा गया : एक औरत मर्दाना जूता पहनती है फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन औरतों पर लअूनत फरमाई जो मरदानी वजअ इख्तियार करें”(210/2)

जनाने अरब(अरब की औरतें)जो ओढ़नी ओढ़तीं, हिफाजत के लिये सर पर पेच दे लेतीं उस पर यह इरशाद हुआ कि एक पेच दें दो न दें कि अमामा वाले मर्दों से मुशाबहत न होजाये क्योंकि औरतों को मर्दों से और मर्दों को औरतों से “तशब्बोह” हराम है।

इमाम अहमद व अबूदाऊद व हाकिम ने बसनद हसन उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की:

**”ان النبي صلى الله تعالى عليه وسلم دخل عليها و**

**تختمر فقال لية لا ليتين.** यअनी “नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सय्यिदा उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा के हों तशरीफ ले गये तो देखा कि वह ओढ़नी ओढ़ रही हैं तो इरशाद फरमाया सर पर सिर्फ एक पेच दो, दो न हों (सुनन अबू दाऊद 212/12)

अब्दुल्ला इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हा ने उम्मे सईद बिनते उम्मे जमील को कमान लगाये मर्दानी चाल चलते देखा तो इरशाद फरमाया :

**”سمعت رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم يقول**



ليس منا من تشبه بالرجال من النساء ولا من تشبه  
بالنساء من الرجال رواه احمد والطبراني.

यअनी " मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाते सुना कि : वह औरत हम में से नहीं जो मर्दों से मुशाबहत इख्तियार करे और वह मर्द भी जो औरतों से मुशाबहत इख्तियार करे, उसे इमाम अहमद व इमाम तबरानी ने रिवायत किया" (मुसनदे अहमद इब्ने हमबल)

औरत को अपने सर के बाल कतरना हराम है और कतरे तो मलऊना कि यह मर्दों से मुशाबहत है और औरतों का मर्दों से तशब्बोह हराम दुरे मुख्तार में है :

قطعت شعر رأسها اثم ولعنت والمعنى المؤثرة التشبه بالرجال.  
यअनी " किसी औरत ने सर के बाल कतर डाले तो गुनहगार हुई नीज उस पर अल्लाह की लअनत हुई उस में जो इल्लत मुअरिसरा है वह मर्दों से "तशब्बोह" है"। (250/2)

जब औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें

यह भी कयामत की निशानियों में से है और यह निशानी वाक़ेअ हो चुकी ज़माना-ए-हाल में ब-कसरत उस का मुशाहिदा हो रहा है और यह शरअन ममनूअ है।

मुसनद इमाम अहमद जि. 1 स. 339/पर है :

"لعن الله المتشبهين من الرجال بالنساء والمتشبهات  
من النساء بالرجال" यअनी "अल्लाह की लअनत है उन लोगों पर जो औरतों की वज़अ इख्तियार करें और उन औरतों पर जो मर्दों की वज़अ इख्तियार करें"

आज औरतों और मर्दों ने बहुत से तरीक़े एक दूसरे से मुशाबहत के इख्तियार कर लिये हैं। उन्हीं में से एक मरव्वजा चैन की घड़ी है जिसे आम तौर पर मर्दों में पहनने का रिवाज हो गया है।



यहाँ तक कि बहुत सारे इमाम, मौलवी, और मुफ्ती भी बे दरेग उस को पहने हुए नज़र आते हैं। यह क़तअन जीनते ममनूआ और तहल्ली नाजाइज़ है उस का जवाज़ अअ़ला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी कुद्दिस सिरूहु के कलिमात से बताया जा रहा है हालाँकि उन के कलिमात से हरगिज़ उस का जवाज़ साबित नहीं होता।

अव्वलनः—तो यह चैन जो हाथ में पहनी जाती है उन (अअ़ला हज़रत)के ज़माने में थी ही नहीं।

सानियनः—जिस चैन पर उस को क़यास किया जा रहा है उस के तअल्लुक से अअ़ला हज़रत अज़ीमुलबरकत फ़ाज़िले बरेलवी कुद्दिस सिरूहु मुतअदिद जगह जो कुछ फ़रमाते हैं उस से उस की साफ़ हुरमत मुस्तफ़ाद होती है।

अअ़ला हज़रत से यह सवाल हुआ कि :

फ़ी ज़मानिना कुर्तों और सदरियों में चाँदी के बोताम मअ़ जन्ज़ीर लगाते हैं जाइज़ हैं या नहीं ? इला आख़िरिही”

उस के जवाब में अअ़ला हज़रत फ़रमाते हैं :

“चाँदी के सिर्फ़ बोताम टाँकने में हरज नहीं कि कुतुबे फ़िक्ह में सोने की घुन्डीयों की इजाज़त मुसर्रह मगर यह चाँदी की ज़नज़ीरें कि बोतामों के साथ लगाई जाती हैं। सख़्त महल्ले नज़र हैं कलिमात अइम्मा से जब तक उन के जवाज़ की दलील वाज़ेह कि आफ़ताब रौशन की तरह ज़ाहिर व जली हो, न मिले हुक्मे जवाज़ देना महज़ जुरअ़्त है कि चाँदी सोने के इस्तिअ़माल में अस्ल हुरमत है। शैख़ मुहक्किक् मौलाना अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिस सिरूहु “अशअ़तुल लमआत शरहे मिश्कात”में फ़रमाते हैं :अस्ल दर इस्तिअ़माले जहब व फ़िद्दा हुरमत अस्त” यअ़नी जब शरअ़ मुतहहर ने हुक्मे तहरीम(हराम होने का हुक्म) फ़रमा कर उन की इबाहते अस्लिया को नरख़ कर दिया तो अब उन में अस्ल हुरमत होगई कि जब तक किसी



खास चीज की रुखसत शरअ से वाजेह व आशकार न हो, हर गिज़ इजाज़त न दी जायेगी बल्कि मुतलक तहरीम के तहत (हराम होने में दाखिल रहेगी)।

**ثانياً** **هذا وجهه واقول!** जाहिर है कि उन जन्जीरों के उस तरह लगाने से तजय्युन मकसूद होता है बल्कि तजय्युन ही मकसूद होता है और ऐसे ही तजय्युन को तहल्ली कहते हैं। उलमा तसरीह फरमाते हैं मर्द को सिवा अँगूठी पेटी और तलवार के सामाने मिस्ल पर तले वगैरा के चाँदी से तहल्ली किसी तरह जाइज़ नहीं। (फतावा रजवीया जि.9 स. 34)

नीज़ उसी के स. 298 / 299 पर फरमाते हैं :

“जन्जीरों के लिये न ज़र (बटन) की तरह कोई नस फकीर ने पाया न जवाज़ पर कोई साफ़ दलील बल्कि वह ब-जाहिर मकसूद बिनफ़िसहा हैं, न ज़र की तरह कपड़े की कोई गरज उन से मुतअल्लिक, न इल्म की तरह सौब में मुस्तहलक के ताबेअ सौब ठहरें न उन से सिंगार और जीनत के सिवा कोई फ़ायदा मकसूद और वह ज़ेवरे ज़नान (औरतों के ज़ेवर) से कमाल मुशाबिह हैं उन की हयअत (बनावट) व हालत बिल्कुल सहारों की सी है कि एक तरफ़ उन के कुन्डों में बालियाँ पिरोकर उन को दोनों जानिब से पेशानी के बालों पर ला कर काटा डाल कर मिला देते हैं वह भी इन जन्जीरों की तरह लड़ियाँ ही हैं बल्कि उन से अलावा तजय्युन एक फ़ाइदा भी मकसूद होता है कि बालियों का बोझ कानों पर न पड़े यह उन्हें उठा कर सहारा दिये रहें। इसी लिये उन को सहारे कहते हैं और इन जन्जीरों की लड़ियाँ सिवा जीनत के कोई फ़ायदा नहीं देतीं तो ब निस्वत सहारों के उन की लड़ियाँ झूमर की लड़ियों से ज़्यादा हैं। और सहारों की तरह यह भी दाखिल मलबूस (पहनने में शामिल) हैं बल्कि उन का सिर्फ़ जीनत के लिये बिज्ज़ात मकसूद और कपड़े की अग़राज़ से महज़ बे तअल्लुक व नामुस्तहलक होना झूमर की तरह



उन के और भी ज्यादा लक्स मुस्तकिल का मुकतजी है(बटन के चेन की लड़ियों इमार पहनने की तरह है जो जीनत में शामिल हैं और बतौर जीनत पहनना मर्द के लिए जाइज नहीं ) इला आखिरिही"

यहाँ से जाहिर हुआ कि अअला हजरत अजीमुलबरकत कुदिस सिरुहु के जमाने में जो जेबी घड़ी की चेन राइज थी जिसे कुरते सदरी वगैरा में लगा कर घड़ी जेब में रखते थे,उन के नजदीक उस का भी वही हुक्म है जो जेवर का है तो यह चीज जो दरती घड़ी में लगाई जाती है बदरजा-ए-ऊला जेवर है और उस के पहनने से तहल्ली व जेबाइश मकसूद होना जाहिर तर है।

लिहाजा उस की हुर्मत अजहर और उस में औरतों से तशब्बोह बाहिर व रौशन(इस में औरतों से मुशाबहत बिलकुल जाहिर और रौशन है) तर वहाँ पहनने से मुशाबहत होने की वजह से हुक्मे हुर्मत(हराम होने का हुक्म)दिया तो यहाँ पहनने में कोई शुबह ही नहीं तो यहाँ खालिस हुर्मत है न कि शुबहे हुर्मत(न कि हराम होने का शक)!

जिस के बारे में फरमाया :

"मुहरमात में शुबह मिस्ले यकीन है तो उस में चीज की हुर्मत व निस्वत जन्जीर के खूब आश्कार(जाहिर)है"

यहाँ से मुजव्वेजीन(जाइज करने वाले)के कयास की हालत जाहिर हो गई हमारी दानिस्त(इल्म)में अअला हजरत अजीमुलबरकत कुदिस सिरुहु के कलिमात में न तआरुज(टकराव)है, न उन के किसी फतवे से उस चीज या उस जन्जीर का जवाज निकलता है।

बिल्फर्ज अगर सूरते तआरुज(टकराव की शकल)हो भी तो रुजूअ उन तसरीहात की तरफ लाजिम है कि खुद कबी और शुबह से साफ है और जिस कलिमा से उस का खिलाफ मुतवहहम(शक)हो, उस की तावील लाजिम है और उस तरह ततबीक(जो बातें एक दूसरे के बजाहिर खिलाफ हो लेकिन उन में मुवाफिकत बयान करना)देना



जरूरी है।

लिहाजा अगर "अत्तीबुलवजीज़" में अल्लामा शामी की उस बहस के पेशे नजर कि यह वजअे लुब्स(पहनने के लिए बनना) है या नहज तअलीके जन्जीर(जंजीर लटकाने के लिए), अअला हजरत ने यह फरमादिया :

"एहतिराज औला है या उस से बचना चाहिये"

तो तावील उसी कलिमा-ए-तवहहुमे जवाज़(जिस जुमले से जाइज़ होने का वहम होना)) की जरूरी है ताकि दूसरे फतावा से तआरुज़(टकराव) लाज़िम न आवे वसा औकात "औला" या उस के हम मअना लफज़ का इतलाक़ "वाजिब" पर करते हैं। चुनौचे "अनाया" जि. अत्वल स. 242 पर है :

”وَكَذَلِكَ إِنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَمْعُونَ وَيَنْصَتُونَ سَأَلَ أَبُو يَوْسُفَ أَبَا حَنِيفَةَ رَحِمَهُمَا اللَّهُ إِذَا ذَكَرَ الْإِمَامَ هَلْ يَذْكُرُونَ وَيُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبَّ إِلَى أَنْ يَسْتَمْعُوا وَيَنْصَتُوا وَلَمْ يَقْلَ لَا يَذْكُرُونَ وَلَا يَصَلُّونَ فَقَدْ أَحْسَنَ فِي الْعِبَارَةِ وَاحْتَشَمَ مَنْ أَنْ يَقُولَ لَا يَذْكُرُونَ وَلَا يَصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِنَّمَا كَانَ الْإِسْتِمَاعُ وَالْإِنْصَاتُ أَحَبَّ لِأَنَّ ذِكْرَ اللَّهِ وَالصَّلَاةَ عَلَى النَّبِيِّ عَلَيْهِ السَّلَامُ لَيْسَ بِفَرَضٍ وَاسْتِمَاعُ الْخُطْبَةِ فَرَضٌ.

यअूनी " यँहीं अगर खतीब नबी अलैहिस्सलातु वरससलाम पर दुरुद पढ़े तो लोगों को सुनना और चुप रहना लाज़िम है इमाम अबू यूसुफ ने इमाम अअज़म से पूछा इमाम अगर ज़िक्र करे क्या मुक़तदी भी ज़िक्र करें और नबी अलैहिस्सलातु वरससलाम पर दुरुद भेजें ? इमामे अअज़म ने फरमाया मुझे यह पसन्द है कि वह लोग खुतबा सुनें और



खामोश रहें और इमामे अजम ने यह न कहा कि जिक्र न करें और दुरुद न भेजें तो इस तरह तअबीर में हुसने उसलूब से काम लिया और यह कहने से बचे कि जिक्र न करें और दुरुद न भेजें और सुनना और खामोश रहना इस लिए पसन्दीदा ठहरा कि अल्लाह का जिक्र और नबी अलैहिस्सलाम पर दुरुद भेजना फर्ज नहीं और खुतबा का सुनना फर्ज है।

नीज "जौहरा नय्यिरा" जि. 2 स. 260 पर है :

**“وَيَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ قَدْرُ فِضَّةِ الْخَاتَمِ مِثْقَالًا وَلَا يَزَادَ عَلَيْهِ وَ”**  
**“يَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ قَدْرُ فِضَّةِ الْخَاتَمِ مِثْقَالًا وَلَا يَزَادَ عَلَيْهِ وَ”**

अंगूठी की चाँदी की मिकदार एक मिसकाल होना चाहिये और उस से ज़्यादा करना मनअ है और एक कौल यह है कि चाँदी की मिकदार पूरी एक मिसकाल न करे”।

इस जगह भी **“يَجِبُ”** (वाजिब)की जगह **يَنْبَغِي** (चाहिये)

फरमाया खुद “फतावा रजविया” में उस की नज़ीर यह इरशाद है अशरा मुहर्रम तीन रंगों के बाबत फरमाते हैं:

“मुसलमान को चाहिये अशरा मुबारका में तीन रंगों से बचे सब्ज, सुर्ख, सियाह, सब्ज की वजहें तो मअलूम हो गयी और सुर्ख आज कल नासिबी खबीस खुशी की नियत से पहनते हैं। सियाह में ऊदा, नीला, कासनी, सब्ज में काही, धानी परस्ती, सुर्ख में गुलाबी, अनाबी नारांगी सब दाखिल हैं। गर्ज जिस पर उन में कोई रंग सादिक आये अगर सोग या खुशी की नीयत से पहने जब तो खुद ही हराम है वरना उन की मुशाबहत से बचना बेहतर “इला आखिरिही। (फतावा रजविया जि. 9 स. 301)

यहाँ बेहतर और हराम के तकाबुल से बजाहिर यह मअलूम होता है कि अगर सोग या खुशी की नियत न हो तो उन कपडों को पहनना जाइज बल्कि अच्छा बेहतर के मुकाबिल विह यअनी अच्छा है हालाँकि सियाके कलाम (वयान का अन्दाज़) से यह मअना किस कद्र



बेगाना हैं। यह अम्र किसी से पोशीदा नहीं तो कतअन यहाँ बेहतर मअना तफज्जुल पर नहीं ,न महज मुस्तहब के मअना में और यहाँ इबारत में लफज "चाहिये" भी महज मुस्तहब के मअना में नहीं कि मुकाबिल वाजिब करार पाये बल्कि मुराद यह है कि अगर यह नियत न भी हो जब भी उन की मुशाबहत से बचना औला व वाजिब है तो यहाँ भी लफज "चाहिये" और "बेहतर" "वाजिब" की जगह इस्तिअमाल हुआ है इस लिये पहले यह कहा :

"अशरा मुहर्रम के सब्ज रंगे हुये कपड़े भी नाजाइज हैं। यह भी सोग की गर्ज से हैं इला आखिरिही (फतावा रजविया जि. 9 स. 300)

शायद एक वजह उस जेबी घड़ी की जन्जीर के जवाज की मुम्किन है उस सूरत में जबकि वह चीज चाँदी व सोने के अलावा किसी और धात की हो और उस से तहल्ली जेबाइश व नुमाइश मकसूद न हो बल्कि घड़ी की हिफाजत के लिये कपड़े में छुपा कर लगाई जाये।

JANNATI KAUN?

इस सूरत में अअ्ला हजरत कुदिस सिरुहु के कलिमात स अगर उस चीज के जवाज का ईहाम(वहम)होता है तो उस का महमल यही सूरत है और उसी सूरत पर उन के कलिमात को महमूल करने से उन के फतावा में तआरुज का वहम मुन्दफअ(दूर) हो जाता है मगर यह सूरत जेबी घड़ी की चैन में नहीं तो उस पर कयास दुरुस्त नहीं कि दोनों सूरतें जुदागाना हैं।



## जब गैरुल्लाह की कसम खाई जाये

अलामते कयामत में सरकार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह भी बताया कि लोग गैरुल्लाह की कसम खायेंगे और गैरुल्लाह की कसम शरअन ममनूअ(अल्लाह के अलावा किसी की कसम खाना जाइज नहीं) है।

हदीस शरीफ में है :

**من حلف بغير الله فقد اشرک.** यअनी "जो गैरुल्लाह की कसम खाये वह मुशिरक है" (फैजुलकदीर जि. 6 स. 120)

यअनी इकीकतन मुशिरक है अगर गैरुल्लाह की वह तअजीम मुराद ले जो अल्लाह के लिये खास है उसी कबील(उसी तरह) से बुतों की कसम खाना है।

हजरत अबूहुरैरा से हदीस है जो कसम खाये तो अपनी कसम में यूँ कहे "लात व उज्जा की कसम" तो वह कलिमा-ए-ताहीद पढ़े और जो अपने खोखले से कहे आओ तुम से जुआ खेलूँ तो वह सदका दे।

हदीस के इस फिकरे से मअलूम हुआ कि गुनाह का इरादा जब दिल में पुख्ता हो जाये तो यह भी गुनाह है और उस को जाहिर करना दूसरा गुनाह सदका देने का हुक्म उस गुनाह के कफ़ारे के लिये बतौर इस्तिहाबाब है।

हदीस में है :

**الصدقة تطفى غضب الرب كما يطفى الماء النار.** यअनी सदका अल्लाह के गुज़ब की आतिश को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को। (तबरानी जि. 19 स. 145)

इस हदीस में **"لا اله الا الله"** पढ़ने का जो हुक्म दिया इस में दो एहितमाल है एक यह कि नो मुस्लिम से आदते साबिका (पुरानी आदत)की वजह से सहवन(भूलकर)सबक़ते लिसानी(बोलने की तेज़ी) से



बुतों की कसम सादिर हो तो उस के लिये मुस्तहसन है कि  
**“لا اله الا الله محمد رسول الله”** उन बुरे कलिमात के  
 कफ़ारे के तौर पर पढ़े और दूसरा एहितमाल यह है कि लात व  
 उज्जा और बुतों की तअजीम मकसूद हो।

इस सूरत में वह शख्स मुरतद हो जायेगा और कलिमा—ए—  
 खिलाफ़े इस्लाम से तबरी (दूरी जाहिर करने) के साथ तजदीदे ईमान  
 लाज़िम होगी और कलिमा तौहीद पढ़ना ज़रूरी होगा और अगर  
 गैरुल्लाह की कसम में वह तअजीम मुराद नहीं जो अल्लाह के लिये  
 खास है तो यह हकीकतन शिर्क नहीं लेकिन सूरतन अहले शिर्क के  
 फ़ेअूल से मुशाबा होने की सूरत की वजह से उस पर भी शिर्क का  
 इतलाफ़ आया और ज़जर व तशदीद (सख़्ती और अदब सिखाने) के तौर  
 पर उस के मुरतकिब को भी मुशिरक कहा गया।

इस सूरत में मुराद यह है कि उस शख्स ने मुशिरकों जैसा  
 फ़ेअूल किया इस कबील से याम, दादा, बेटे वगैरा के नसब पर तफ़ाख़ुर  
 (गर्व करने) के तौर पर कसम खाना है जैसा कि ज़माना—ए—जाहिलियत  
 में रिवाज था हदीस में उस से भी मुमानअत आई।

अकूलु (ताजुशशरिआ फ़रमाते हैं) हमारे तर्ज बयान से साफ़ मअलूम हुआ  
 कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एक एअराबी के  
 मुतअल्लिक **“افلح وابيه ان صدق”** फ़रमाना यअनी “यह फ़लाह  
 को पहुँचा अपने बाप की कसम अगर सच्चा है” मुमानअत के तहत  
 दाख़िल नहीं। बल्कि बयाने जवाज़ के लिये है।

गोया सर कार अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने फ़ेअूल से यह  
 बता रहे हैं कि बाप की कसम खाना ना जाइज़ नहीं जब कि रस्मे  
 जाहिलियत के तौर पर तफ़ाख़ुर के लिये न हो, न उस से तअजीम  
 मुफ़रित (हृद से ज़्यादा इज्ज़त देना) कि ममनूअ है, मकसूद हो और  
 एक एहितमाल यह है कि ऐसी जगह ताकीदे कलाम और तकवीयते



बयान(बयान में जोर पैदा करना) मकसूद होती है तो उस सूरत में कसम शिर्क नहीं।

तम्बीह:गैरुल्लाह से मुराद वह तमाम चीजें हैं जिन्हें शरअन अल्लाह व रसूल जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कोई अलाका(तअल्लुक) नहीं न शरअन उन की कोई हु्रमत है, न उन की तअजीम का हुक्म नबी व रसूल कअबा व मलाइका इस मअना कर गैरुल्लाह में दाखिल नहीं(अगर्वे बाबे हलफ में यह भी गैरुल्लाह हैं मगर यह मुन्दरजा बाला के लिहाज से गैरुल्लाह नहीं)कि शरअन उन की तअजीम का हुक्म है।

अजॉ जा कि अल्लाह ने उन की तअजीम का हुक्म दिया ता उन की तअजीम अल्लाह ही की तअजीम है उन की कसम खाना हराम नहीं मगर उलमा ने ब मुकतजा-ए-इहतियात (एहतियात के तकाजे के तौर पर)इस तरह की कसम खाने को मकरूह कहा बल्कि उस से मुमानअत खुद हदीस में आई। कसमे शरई जिस का कफ़ारा लाजिम है,वह अल्लाह की वह कसम है जो अल्लाह की जात से या उस की सिफ़ात से मुतआरिफ़ तौर पर खाई जाये।

गैरुल्लाह की कसम ,कसमे शरई नहीं। उलमा फ़रमाते हैं : अगर गैरुल्लाह की कसम को कसमे शरई जाने और उस का पूरा करना लाजिम समझे इस सूरत में आदमी काफ़िर हो जायेगा।

इमाम राजी ने फ़रमाया :

"मेरी जान की कसम<sup>(1)</sup> तेरी जान की कसम, कहने वाले पर मुझे

1.आज कल लोग छोटी छोटी बातों पर तेरी कसम, तेरी जान की कसम, जैसी कसमें खाने लगते हैं हालाँकि ऐसी कसम खाने से उन्हें कोई फायदा नहीं पहुँचता बल्कि हजरत इमाम राजी के मुताबिक ऐसी कसम 'कुफ़' से ज्यादा करीब है बअज लोग बात बात पर "अगर मैं ऐसा न करूँ या ऐसा कहूँ तो ऐसा हो जाऊँ मसलन हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत से महरूम हो जाऊँ या मेरा बेटा मर जाये या मैं कोढ़ी हो जाऊँ " कह डालते हैं ऐसे लोग मजकूरा बयान से सबक हासिल करें। फारुकी गुफिरलहु



कुफ़ का अन्देशा है और लोग आम तौर पर यह नादानी में कहते हैं अगर ऐसा न होता तो मैं कहता यह शिर्क है।

इमाम राजी के इस कौल से यह जाहिर होता है कि गैरुल्लाह की कसम को कसमे शरई जानने में उलमा के दो कौल हैं।

एक में आदमी मुतलकन काफिर हो जायेगा और दूसरा यह कि उस में अन्देश-ए-कुफ़ है यह दसूरा कौल मोहतातीन मुतकल्लिमीन की रविश पर है और उन का मजहबे मुख्तार व मोअ्तमद है जिस की तफसील आगे आरही है।

अकूलो:—(ताजुशशरीआ फरमाते हैं) यह इस सूरत में है कि कहने वाला उसे कसमे शरई समझे और उस का पूरा करना जरूरी जाने और कसम पूरी न होने की सूरत में कफ़ारा देना जरूरी कयास करे। जैसे बअज़ जाहिल अपने बच्चे की कसम खाते हैं और उस का पूरा करना जरूरी समझते हैं और न करने की सूरत में कफ़ारा लाजिम ख्याल करते हैं।

### JANNATI KAUN?

अगर यह सूरत न हो यअनी काइल उसे कसमे शरई न जाने न तअज़ीमे मुफरित(हद से ज्यादा तअज़ीम करने) का कस्द करे तो उस पर यह महजूर(हुक्म)लाजिम नहीं आता **كَمَالَا يَخْفَى** .

और इस हदीस में गैरुल्लाह की कसम खाने वाले को जो मुशरिक फरमाया गया उस से उस शख्स का भी हुक्म जाहिर जो यूँ कसम खाये "अगर मैं यह काम करूँ" **(وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی)** तो यहूदी या नसरानी या मिल्लते इस्लाम से बरी व बेज़ार हो जाऊँ" ऐसी कसम खाना सख्त हराम बदकाम कुफ़ अन्जाम है।

बअज़ उलमा ने इस पर मुतलकन काइल को काफिर कहा मगर सहीह यह है इस मसअला में वही तफसील है जो **"مَنْ حَلَفَ"** यअनी जो गैरुल्लाह की कसम खाये वह मुशरिक है "में बयान हुई इस तफसील की तरफ खुद दूसरी हदीसों में



इशारा है इरशाद हुआ:

“**من حلف على ملة غير الاسلام كاذباً فهو كما قال**”

यअनी "जो मजहबे इस्लाम के अलावा किसी और मजहब की कसम खाये दराँ हालि(इस हाल में) कि वह इस कसम में झूटा हो तो वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा।(मिरकात शरह मिश्कात जि. 6 स. 581)

हजरत शैख अब्दुल हक मुहदिस देहलवी लिखते हैं :

"कसे कि सौगन्द खुर्द बर दीन कि जजा-ए-इस्लाम अस्त-चुनोंके गोयद अगर ई कार कुनम यहूदी बाशम या नसरानी शवम या बेजारम अज दीने इस्लाम या अज पैगम्बर या अज कुर्आन(काजिबन)दर हाल कि ब दरोग खूरन्दा अस्त ई सौ गन्द रा चुनोंकि बकुनद ई कार रा जेरा कि ई सौगन्द बरा-ए-मनअ फेअल अस्त कि नकुनिन्दा पस सिदके वे बअँअस्त कि नकुनद अगर बकुनद काजिब वाशद **﴿فهو كما قال﴾** पस आँ के हमचुनों अस्त कि गुफ्त यअनी यहूदी व नसरानी व बरी अज दीने इस्लाम जाहिर हदीस आंस्त कि काइले ई हदीस काफिर मीगरदद बमुजरद हलफ या बअद अज हिन्स अज जिहते इसकाते हुमतते इस्लाम **“यअनी अगर कोई दीने इस्लाम के अलावा किसी दीन की कसम खाये मसलन यूँ कहे कि अगर वह यह काम करे तो यहूदी, नसरानी या दीने इस्लाम से बेजार या पैगम्बर या कुर्आन से बरी हो जाये और हाल यह हो कि वह झूटी कसम खाये यअनी वह काम कर बैठे इस लिये कि कसम खाना इस फेअल से बाज रहने के लिये है तो कसम का सच्चा होना यह है कि वह काम न करे जिस के न करने की कसम खाई थी अगर वह काम करेगा तो झूटा ठहरेगा हदीस में उस शख्स के मुतअल्लिक फरमाया कि वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा यअनी यहूदी या नसरानी या दीने इस्लाम से बरी इस हदीस का जाहिर यह है कि ऐसी कसम खाने वाला कसम से काफिर हो जायेगा इस लिये कि उस**



जिहत से कि उस ने हुमत इस्लाम को साकित (इस्लाम की अजमत खत्म किया) किया और कुफ़्र पर राजी हुआ।

(अशतुललमात शरहे मिश्कात जि. सोम स. 211)

बअज़ उलमा ने नज़रे बर जाहिरे हदीस (हदीस के जाहिर को देखते हुए) ऐसी कसम खाने वाले को मुतलकन काफ़िर कहा और बअज़ उलमा ने फ़रमाया कि मुराद उस कसम से यह है कि वह शख्स अपने नफ़्स को तहदीद और उस के वईद में मुबालगा कर रहा है ताकि उस काम से अपने आप को बअज़ रखे तो मकसूद कसम से बशिदते जज़े नफ़्स व तहदीद है। लिहाज़ा हमारे नज़दीक वह जब तक कसम न तोड़े महज़ उस कौल से काफ़िर न ठहरेगा। इसी तरह अगर फ़ेअले माज़ी (गुज़रे हुए काम) पर दीने इस्लाम से बराअत को मुअल्लक किया तो मोहतातीन के नज़दीक काफ़िर न रहेगा और बअज़ मशाइख़ के नज़दीक फ़ेअले माज़ी पर मुअल्लक करने की सूरत में काफ़िर हो जायेगा।

मगर सहीह यही है कि उस सूरत में भी काफ़िरे मुतलक न होगा इस लिये कि काफ़िर एअ्तिकादे कुफ़्र से होता है और यहाँ जाहिर यह कि उस की मुराद कसम से जज़े नफ़्स और तहदीद है यअ्नी जब कि किसी फ़ेअले मुस्तक़बिल पर उस हुक्म को मुअल्लक करे या बराअत को मुअक्कद तौर पर यकीन दिलाना है यह उस सूरत में है कि फ़ेअल माज़ी पर मुअल्लक करे गोया वह बताना चाहता है कि यह काम उस के नज़दीक ऐसा ही मकरूह व ना पसन्द है जैसा कि उस का यहूदी या नसरानी या इस्लाम से बरी होना। इस लिये तहदीदे नफ़्स के लिये ऐसी चीज़ पर मुअल्लक किया जो इस के नज़दीक मकरूह व महज़ूर है।

अकूलो:—(ताजुशशीआ फ़रमाते हैं) हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने इस बाब में जो दूसरा कौल जिक्र किया वह



मोहतातीन(एहतियात) का है जो मुतकल्लिमीन की रविश पर है और उन की रविश यह है कि वह महज़ ज़ाहिर पर हुक्मे कुफ़ नहीं लगाते और कलाम में अदना एहतिमाल मानेअे तकफ़ीर(कुफ़ के खिलाफ़ ज़रा सा शक) हो उस का लिहाज़ करते हैं और काइल को जब तक उस की मुराद ज़ाहिर न हो जाये काफ़िर कहने से गुरेज़ करते हैं और यह एहतिमाल जो उन उलमा को ऐसी क़सम खाने वाले पर हुक्मे कुफ़ लगाने से बाज़ रहने का मुक़तज़ी (चाहना)हुआ वह खुद हदीस से ज़ाहिर है कि फ़रमाया:

“अगर वह उस क़सम में झूटा हो तो वैसा ही है जैसा उस ने कहा”

जिस का साफ़ मतलब यह है कि अगर वह उस क़सम में सच्चा है और उसी मअ्ना—ए—कुफ़री का इबतिदाअन इरादा न किया हो (यअ्नी यहूदी या नसरानी होने पर अब उस से राज़ी होना)तो ऐसा नहीं जैसा कहा और उस एहतिमाल की तसरीह(सराहत) दूसरी हदीस में इरशाद हुई जो हज़रत बुरीदा से मरवी है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया : “जो यह कहे कि वह इस्लाम से बरी है(अगर यह काम करे)तो वह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा और अगर वह उस क़सम में सच्चा है तो इस्लाम में गुनाह से सलामती के साथ न रहेगा।

इमाम काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया कि इस हदीस का ज़ाहिर यह है कि उस क़सम से उस का इस्लाम जाइल हो जायेगा और वह वैसा ही हो जायेगा जैसा उस ने कहा और यह भी एहतिमाल है कि वह उस के काफ़िर होने को क़सम टूटने पर मुअल्लक़ करे। उस की दलील वह हदीस है जो हज़रत बुरीदा ने रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया:

“من قال انى برئ من الاسلام فان كان كاذبا فهو كما قال.

यअ्नी “ जिस किसी ने कहा मैं इस्लाम से बरी हूँ और अपने कौल में



झूटा हों तो वैसा ही है जैसा उस ने कहा" (मिशकात शरीफ स. 296.297)

शायद इस से काइल की मुराद(कहने वाले का मकसद) नफ़्स की तहदीद(सख्त अज़ाब) और खुद को वर्ईदे शदीद है न यह कि यह हुक्म लगाना कि वह अभी से यहूदी हो गया या इस्लाम से बरी हो गया तो गोया वह यूँ कह रहा है कि वह कसम टूटने की सूरत में उसी उकूबत(सज़ा)का सज़ा वार है जिस का यहूदी मुस्तहक़ है और उस की नज़ीर हुजूर का यह कौल है :

**”من ترك الصلاة متعمدا فقد كفر.”** यअनी “जो जान

बूझ कर नमाज़ छोड़े वह काफ़िर हो जाये” यअनी वह काफ़िर की

उकूबत(सज़ा)का सज़ा वार है” (जामिउस्सगीर मअ फैजुलकदीर जि. 6 / 102)

हज़रत इमाम काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी की तरह यहाँ दो कौल ज़िक्र किये मगर सराहतन किसी कौल की सहेत का इफ़ादा न फ़रमाया अल्बत्ता दूसरे एहतिमाल की तौज़ीह व तअलील(वज़ाहत व वजह)इरशाद फ़रमाई जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि उन के नज़दीक भी यही मुख़्तार है कि काइल मुतलकन काफ़िर न ठहरेगा बल्कि कसम टूटने की सूरत में रज़ा बिलकुफ़ के तयक्कुन(कुफ़ पर राज़ी रहने के यकीन) की वजह से काफ़िर होगा और यही हदीस का ज़ाहिर मफ़ाद(मकसद) है कि उस के इस्लाम से बरी होने का काज़िब(झूटा)होने पर मुअल्लक़ फ़रमाया तो वह इस बाब में न सिर्फ़ इरशादे उलमा से बल्कि खुद हदीस से मअलूम हुआ कि अगर मुस्लिम के कलाम में अगर मुतअद्दिद एहतिमालात हों जो उस के कुफ़ के मुक़तज़ी(चाहते)हों और एक वजह से उस के इस्लाम के मुक़तज़ी(इस्लाम ज़ाहिर हो)हों तो हम पर लाज़िम है कि एक वजह की तरफ़ मैलान रखें और जब तक एहतिमाल काइम हो, मुसलमान को काफ़िर न कहें।

इस लिये रहुल मुहत्तार में फ़रमाया :

**”لا يفتى بكفر مسلم ان امكن حمل كلامه على محمل حسن او كان في كفره اختلاف ولو كان ذلك رواية ضعيفة.”**



यअनी" मुसलमान के काफिर होने का फतवा न दिया जायेगा जबकि उस के कौल व फेअल को अच्छे पहलू पर रखना मुमकिन हो या उस के कुफ़ में इख़िलाफ़ हो अगर्चे रिवायते जईफ़ा हो।

(रद्दुल मुहत्तार, जि. 4 स. 229, 230)

सुम्मा अकूलो (अल्लामा अजहरी फरमाते हैं) हमारे कलिमात जो अभी गुज़रे उन से साफ़ ज़ाहिर है कि हदीस का ज़ाहिर मफ़ाद (मक़सद) उस काइल का बसुदूरे हिन्स (जब कसम तोड़े) काफिर होना है न कि मुतलकन काफिर होना तो उस सूरत में ज़ाहिर हदीस भी उस दूसरे कौल के काइलीन के साथ है और काइल के मुतलकन कुफ़ के ज़ाहिर होने का दअ्वा महल्ले नज़र (गौर करने का मक़ाम) है।

इस को ज़ाहिरन तस्लीम भी कर लें (ज़ाहिरी तौर पर मान भी लें) तो उस पर काइल की तक्फ़ीर (काफिर कहना) उसी सूरत में मुमकिन है जब कि ज़ाहिरी मअ्ना के मुराद होने का एहतिमाल आशकार (ज़ाहिर) हो और अगर करीना उर्फ़ या और कोई करीना इस बात पर काइम हो कि काइल ने वह मअ्ना—ए—कुफ़ी असलन मुराद (कुफ़री मअ्ना बिलकुल मुराद न लिये) न लिये तो उस सूरत में वह एहतिमाल ही न रहेगा और ज़ाहिर मतरूक (ज़ाहिर मअ्ना छोड़ दिये जायेंगे) ठहरेगा उस की बहुत मिसालें मुम्किन हैं।

आम बोल चाल में कहते हैं कि "फसले बहार ने सब्ज़ा उगाया, हाकिम ने बचाया, उस मरज़ का यह शाफी इलाज है, यह ज़हरे कातिल है" यहाँ इन सब मिसालों में मोमिन का ईमान, उर्फ़ सब गवाह हैं कि उस की मुराद हकीकी मअ्ना जो लफ़ज़ से ज़ाहिर है नहीं बल्कि इन तमाम मिसालों में सब की तरफ़ इस्नाद की गई है कि एअ्तिकाद मोमिन का यह है कि मुअरिसरे हकीकी अल्लाह तआला है और यह चीज़ें खुद मुअरिसर नहीं बल्कि अल्लाह के काइम करदा अस्बाब हैं जिन में अल्लाह तआला ने यह तासीर रखी है।

यह वहाबिया का जुल्म है कि इन आम मुहावरात से आँखें मीचते हैं और उन के बोलने को तो मुसलमान जानते हैं मगर उसी



तौर पर औलिया, अम्बिया के लिये जो मुसलमान तसरूफ व मदद साबित करे तो उसे मुशिरक गर्दानते हैं। जिस में राज यह है कि उन के नज्दीक औलिया दर किनार रसूल ही की तअजीम शिक है जैसा कि "तकवियतुलईमान" के मुतालअ (पढ़ने)से जाहिर है।

अअला हजरत अजीमुलबरकत उन ही के हक में फरमाते हैं।

शिक ठहरे जिस में तअजीम रसूल

उस बुरे मजहब पे लअनत कीजिये

आमद बर सरे मतलब ! अब इस मसअला जाहिरा की तरफ लौटिये और तकरीरे मुनदरजा बाला पर नजर रख कर सोचिये जब कि काइल की मुराद अपने नफ्स को ज़अ्र व तहदीद और वईदे शदीद और उस मकरूह व महज़ूर काम पर मुअल्लक करने से उस काम से इम्तिनाअ व इज्तिनाब(मुहाल व परहेज़) की ताकीद ठहरी तो यह अगर उर्फ आदत से मअलूम हो तो ऐसी सूरत में वह जाहिरी जिन का मफ़ाद मुतलकन काफिर होना है न मुतहम्मिल न मुराद बल्कि कतअन मतरूक हैं और उस के हक में जाहिर बल्कि फौकुज़्जाहिर काइल की वही मुराद है जो उर्फ व उस्तूबे मोअताद से मअलूम हुई।

लिहाज़ा काइल जब तक हानिस न हो काफिर न ठहरेगा। हाँ यह ज़रूर है कि ऐसी कसम खाना सख्त शनीअ अशद हराम है जिस से काइल पर तोबा लाज़िम है और एहतियातन तजदीद ईमान भी ज़रूर ! (दुर्रे मुख्तार जि. 4 स. 246,247 पर है)

**”فیکون کفر اتفاقا یبطل العمل والنکاح واولاده اولاد الزنا وما فيه خلاف یومر بالا ستغفار والتوبة وتجديد النکاح”** जो बात

मुत्तफ़क अलैहि कुफ़ (जिस बात के कुफ़ होने में इत्तिफ़ाक) है वह अमल को और निकाह को बातिल कर देती है और ऐसे शख्स की औलाद औलादुज़्ज़ना है और जिस के कुफ़ होने में इख़्तिलाफ़ है, उस में काइल को तौबा (तजदीदे ईमान) तजदीद निकाह का हुक्म है।



रही यह बात कि बसूरते हिन्स(कसम तोड़ने की सूरत में) उस पर कफ़ारा है या नहीं तो अइम्मा हन्फिया का मज़हब यह है कि कसम तोड़ने की सूरत में उस पर कफ़ार-ए-कसम लाज़िम होगा जब कि किसी फेअले आइन्दा पर कसम को मुअल्लक किया हो और उसकी नज़ीर तहरीमे मुबाह है यअनी किसी फेअले मुबाह को अपने ऊपर बज़रिआ कसम हराम कर ले तो अल्लाह तआला ने अपने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से फ़रमाया :

**”يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ.”** यअनी ऐ ग़ैब

बताने वाले(नबी)तुम अपने ऊपर क्यों हराम किये लेते हो वह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल की” सूरए तहरीम पारा 28/आयत1)

सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रत उम्मुलमोमिनीन हफ़सा रदियल्लाहु तआला अन्हा के महल में रौनक अफ़रोज़ हुये। वह हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु की इयादत को तशरीफ़ ले गयीं। हुज़ूर ने हज़रत मारिया किब्तिया को सर फ़राजे ख़िदमत फ़रमाया। यह हज़रते हफ़सा पर गिरा गुज़रा हुज़ूर ने उन की दिल जोई के लिये फ़रमाया:मैं ने मारिया को अपने ऊपर हराम किया और मैं तुम्हें खुश ख़बरी देता हूँ कि मेरे बअद उम्मत के मालिक अबूबक़ व उमर होंगे वह उस से खुश होगयीं और निहायत खुशी में उन्होंने ने यह तमाम गुफ़तुगू हज़रत आइशा रदियल्लाहु तआला अन्हा को सुनाई उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई :

इस आयत के मुत्तसिल सर कार से यह इरशाद हुआ:

**”قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ.”** बे शक़ अल्लाह ने

तुम्हारे लिये तुम्हारी कसमों का उतार मुकरर फ़रमा दिया”

(पारा 28 सूरए तहरीम आयत 2 कन्जुलईमान)

उस तरह कसम खाकर कि वह अगर यह काम करे”तो वह



यहूदी या नसरानी हैं" अपने एअ्तिकाद में मुबाह को हराम ठहरा लिया। लिहाजा बसूरत हिन्स यहाँ भी कफ़ारा लाज़िम होगा। यह उस सूरत में है जब कि किसी फ़ेअ़ले आइन्दा पर ऐसी कसम खाई जाये और अगर फ़ेअ़ले माज़ी पर ऐसी कसम खाई और इस कसम में वह शख़्स झूटा था तो इस सूरत में कफ़ारा नहीं महज़ तोबा लाज़िम है और एह्तियातन तजदीदे ईमान तजदीदे निकाह भी ज़रूरी है।

इस किस्म की कसम उर्फ़ में "यमीने ग़मूज़" कहलाती है और उस में भी हस्बे साबिक़ दो कौल हैं पहला यह कि वह शख़्स मुतलक़न काफ़िर ठहरेगा और इस सूरत में ज़ाहिर हदीस "कि फ़रमाया अगर वह झूटा इला आख़िरिही" उस का कौल शदीद है और दूसरा कौल यह कि महज़ कसम मुराद ली तो काफ़िर न होगा।

यहाँ तक कसम की दो किसमें बयान हुई और तीसरी किस्म "यमीने लग्व" है यअ़नी ग़लत फ़हमी में किसी बात पर कसम खाई और वाकिआ उस के गुमान के ख़िलाफ़ हो मसलन यूँ कहे "खुदा की कसम मैं ने ज़ैद से बात न की" "खुदा की कसम मैं घर में दाख़िल हुआ" इस का हुक्म यह है कि उस में न गुनाह न कफ़ारा।

**قال الله تعالى:**

**"لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ."** यअ़नी अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत फ़हमी की कसमों पर हाँ उन कसमों पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुमने मज़बूत किया" (सुरए माइदा पारा 7 आयत 89 कन्जुल ईमान)

यहाँ तो ग़ैरुल्लाह की कसम के मुतअल्लिक तफ़सीली अहकाम बर वजह तमाम हुई और खुद अल्लाह के असमा व सिफ़ात की कसम खाना सख़्त महल्ले इहतियात है लिहाजा इस में भी ज़्यादती न चाहिये।

हदीस शरीफ़ में आया :



“**مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللَّهِ أَوْ لِيَصْمِتْ**” यअनी

“जो कसम खाने का इरादा करे तो अल्लाह की कसम खाये या चुप रहे” (फैजुलकदीर जि. 6 स. 207)

और अकसर अहवाल में अल्लाह की कसम खाने से बअज़ रहना और नाम इलाही को इब्तिज़ाल (हलका जानना) से मुक़तज़ा—ए—इहतियात है और बकसरत अल्लाह की कसम खाना जुरअत व बे बाकी है।

इसी लिये कुआने करीम में फरमाया :

“**وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّإِيمَانِكُمْ**” यअनी “और अल्लाह

को अपनी कसम का निशाना न बनाओ” (सुरए बक पारा 2 आयत 224 कन्जुलईमान)

मुफ़स्सेरीन ने इस आयत के मअना यह बताये कि अल्लाह के नाम को निशाना न बनाओ और जा व बे जा उस को मुबतज़ल न करो कि तुम नेको कार रहो जब नादिरन कसम खाओ और गुनाह से बचो जब कि तुम्हारी कसमें कम हों। इस लिये कि कसमों की कसरत नेकी और तक्वा से दूर करती है और गुनाह और अल्लाह के हज़ूर बे बाकी से करीब करती है।

चुनाँचि अल्लामा जस्सास राज़ी फरमाते हैं:

“**فَالْمَعْنَى لَا تَعْتَرِضُوا اسْمَ اللَّهِ وَتَبْذُلُوهُ فِي كُلِّ شَيْءٍ لَّانَ تَبَرُّوَ إِذَا حَلَفْتُمْ وَتَتَّقُوا الْمَآثِمَ فِيهَا إِذَا قُلْتُمْ إِيْمَانَكُمْ لَآنَ كَثَرَتْهَا تَبْعِدُ مِنَ الْبِرِّ وَالتَّقْوَى وَتَقْرُبُ مِنَ الْمَآثِمِ وَالْجُرْأَةُ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى**” (احکام قرآن جلد اول ص ۲۵۲)

“तो मतलब यह है कि अल्लाह तबारक व तआला तुम को कसरते कसम से मनअ करता है और बे बाकी से बाज़ रखता है इस लिये इस से बाज़ रहने में ही नेकी व परहेगारी और तुम्हारी इस्लाह है”।



जब आदमी बगैर तलब के गवाही में सबक़त करे

यअनी बातिल गवाही दे जैसा कि "मजमअ बिहारुल अन्वार" में है:

يأتى قوم يشهدون ولا يستشهدون هذا عام فيمن يؤدى  
الشهادة قبل أن يطلبها صاحب الحق فلا يقبل، وما قبله  
خاص، قيل هم الذين يشهدون بالباطل

कौम आयेगी जिस के लोग गवाही देंगे और उन से गवाही तलब नहीं  
की जायेगी यह आम है उस में कि गवाही पूरी कर ले साहिबे हक के  
तलब करने से पहले कबूल नहीं होगी और यहाँ कब्लियत खास है  
और कहा गया कि उस से मुराद वह लोग हैं जो झूठी गवाही दें।

(मजमअ बिहार जि. अब्बल स. 270) करीना व मकाम उस का मुक़तज़ी<sup>(1)</sup> है।

خير الناس قرنى ثم الذين يلونهم ثم الذين  
يلونهم ثم يفسحوا الكذب حتى يشهد الرجل ولا يشهد ويستحلف  
يأنى فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تآلا اٰلہی

वसल्लम ने : सब से बेहतर मेरा ज़माना है फिर जो उस से करीब है फिर जो उस से  
करीब है फिर झूट की कसरत हो जायेगी यहाँ तक कि आदमी गवाही देगा बगैर उस  
के कि गवाही तलब की जाये और आदमी हल्फ़ लेगा बगैर उस के कि उस से  
हल्फ़ लिया जाये" (तिर्मिज़ी शरीफ़ जि. दोम स. 54 / फारुकी गुफिरलहु).



## जब ओहदे मीरास हो जायें

मुराद उस से वह लोग हैं जो महज बाप दादा की वरासत से अमीर व वाली बन बैठें और मुसलमानों के मुआमलात और उन के बिलाद के खुद साख्ता हाकिम हो जायें बगैर उस के कि खवास अशराफ (शरीफ लोग) व अहले इल्म कि अरबाबे हिल व अक्द हैं। बे जब्र व इकराह अपने इख्तियार से उन के मुआविन हों न ऐसे लोगों से मशवरा लिया जाये न यह अमीर बैठने वाले उस के मुस्तहक<sup>(1)</sup> हुए यह शरअन मजमूम व ममनूअ है और उस हुक्मे मनअ व मजम्मत के उमूम में वह लोग भी दाखिल हैं। जिन को अवाम अरबाबे हिल व अक्द को नजर अन्दाज कर के चुन लें और बदरज-ए-औला वह लोग उस के मिस्दाक हैं जो खुद को चुनवाने के लिये खड़े हुये हैं।

“मजमउलबिहार” में एक हदीस लिखी जिस का मजमून यह है कि उस से बढ़ कर बड़ा खाइन कोई नहीं जो गैर अरहाबे राय अवाम का मुन्तखब अमीर हो।

इस हदीस की तरदीक जमाना-ए-हाल में चुनिन्दा और चुनीदा के अहवाल से खूब जाहिर है। लिहाजा इस पर मजीद तब्सरे की जरूरत नहीं और हदीसे मुन्दरजा बाला के मिस्दाक वह लोग भी हैं जो बुजुर्ग के जानशीन महज वरासत के बल पर बगैर इस्तिहकाक बे इन्तिखाबे शरई बन बैठे हैं जैसा कि जमाना-ए-हाल में मुशाहिदा है।

1. हदीसे पाक में है : **اِذَا وَسَدَ الْأَمْرَإِي إِلَى الْخِلَافَةِ أَوْ الْقَضَاءِ أَوْ الْأَمْرِ** यानी जब काम मसलन खिलाफत या कजा या अमारत ना अहलों के सुपुर्द हो जाये तो कयामत का इन्जियार करो”  
मजमउलबिहार जि. अब्बल स. 101 फारुकी गुफिरलहु.



## जब मर्द मर्दों पर और औरतें औरतों पर इक्तिफ़ा करे

उस की तफ़सील दूसरी हदीस में इरशाद हुई जिस को ख़तीब और इब्ने असाकिर ने हज़रत वासिला और अनस से रिवायत किया कि सरकार अलैहिस्सलातु वरस्सलाम ने फ़रमाया : दुनिया उस वक़्त तक फ़ना न होगी जब तक औरतें औरतों पर और मर्द मर्दों पर इक्तिफ़ा न करें और **“السحاحاق”** औरत का औरतों से बाहम मुबाशरत करना, औरतों का आपस में जिना है।

हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं जो कन्जुलउम्मा ल जि. 14 स. 226 पर मौजूद हैं:

**“لا تذهب الدنيا حتى يستغنى النساء بالنساء و  
الرجال بالرجال، والسحاحاق زنا النساء فيما بينهن”**

और तीसरी हदीस हज़रत उबै से मरवी है फ़रमाया कि हम से कहा गया इस उम्मत के पीछे लोगों में क़यामत के करीब कुछ चीज़ें ज़ाहिर होंगी। उन में से यह है कि आदमी अपनी बीवी से या कनीज़ से उस के दुबुर में

1. आज कल अमरीका में यह मर्ज आम है उन का इस्तिदलाल यह है कि हम ने निकाह किया है जिस से बीवी के जिस्म का हर हिस्सा शौहर पर हलाल हो जाता है तुरफ़ा यह कि वहाँ की औरतें खुद अपनी रगबत से उस कबीह फ़ेअल का इरतिकाब कराती हैं जो सख़्त हराम है और जो लोग ऐसा करते हैं सख़्त गुनाहगार और मुस्तहक़े ग़जबे ज़ब्यार हैं उन पर अपने उस फ़ेअल से तोबा व इस्तिग़फ़ार वाजिब।

चुनौचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **اتى حائضا او امرأة فى دبرها فقد كفر بما انزل على محمد صلى الله تعالى عليه و سلم** यानी जो शख्स अपनी बीवी से हालते हैज में या उस की दुबुर में जिमाअ करे बे शक उस ने कुफ़ किया उस के साथ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नाजिल हुआ अहकामुलकुर्आन जि. अब्वल स. 353 (फारुकी)



जिमाअू करे और यह उन अअमाल में से है जिन को अल्लाह और  
 रसूल ने हराम किया और उस पर अल्लाह व रसूल का ग़ज़ब है और  
 उन्हीं में से मर्द<sup>(1)</sup> का मर्द के साथ सोहबत करना और यह उन बातों  
 में से है जिन को अल्लाह व रसूल ने हराम किया और उन्हीं में  
 से औरत का औरत के साथ मुबाशरत करना और यह उन अअमाल  
 में से है जिन को अल्लाह व रसूल ने हराम किया और उस पर  
 अल्लाह व रसूल की नाराज़गी है इला आखिरिही (उस के आखिर तक)

हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं जो कन्जुलउम्मा ज़ि. 14 स. 575

पर मौजूद हैं :

”عن ابي قال قيل لنا أشياء تكون في آخر هذه الامة  
 عند اقتراب الساعة فمنها نكاح الرجل امرأته وامته في  
 دبرها وذلك مما حرم الله ورسوله ويمقت الله عليه و  
 رسوله ومنها نكاح الرجل الرجل وذلك مما حرم الله  
 عليه ورسوله ومنها نكاح المرأة المرأة وذلك مما حرم  
 الله ورسوله ويمقت الله عليه ورسوله  
 صلى الله عليه وسلم“

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुर्ब  
 क़यामत की जो निशानियाँ बयान फ़रमायीं उन में से अकसर अलामतें  
 वाक़ेअू हो चुकीं जिस पर मुशाहिदा शाहिदे अदल है और जो बाकी हैं  
 वह भी ज़रूर वाक़ेअू होंगी वल्लाहु तआला अअलमु

1. यह इस कदर कबीह और नापाक फ़ेअूल है कि अगर लूती तमाम समन्दरों के  
 पानी से गुस्ल करे तब भी पाक नहीं होगा फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला  
 अलैहि वसल्लम ने कि : अल्लाह तआला लवातत के मुरतकिब को क़ब्र में खिन्जीर  
 बना देता है उस के नथनों में आग सी घुस्ती है और पीछे से निकलती रहती  
 है (नुजहतुल मजालिस ज़ि. 2 स. 62) फ़ारुकी.

2. जिस तरह मर्दों में लवातत का मर्ज तेज़ी से बढ़ रहा है उसी तरह अब औरतों में  
 भी हम जिन्स परस्ती बढ़ती जा रही है और तुरफ़ा तो यह कि योरोप के अक्सर  
 ममालिक में उसे कानूनी दर्जा हासिल है और वहाँ हम जिन्स परस्त औरतें और मर्द  
 आपस में बे डिझक कोर्ट मैरेज कर रहे हैं इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि  
 वसल्लम की यह पेशीन गोई हर्फ़ बहर्फ़ सच साबित हो रही है (फ़ारुकी गुफ़िरलहु)